ध्यानम्

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

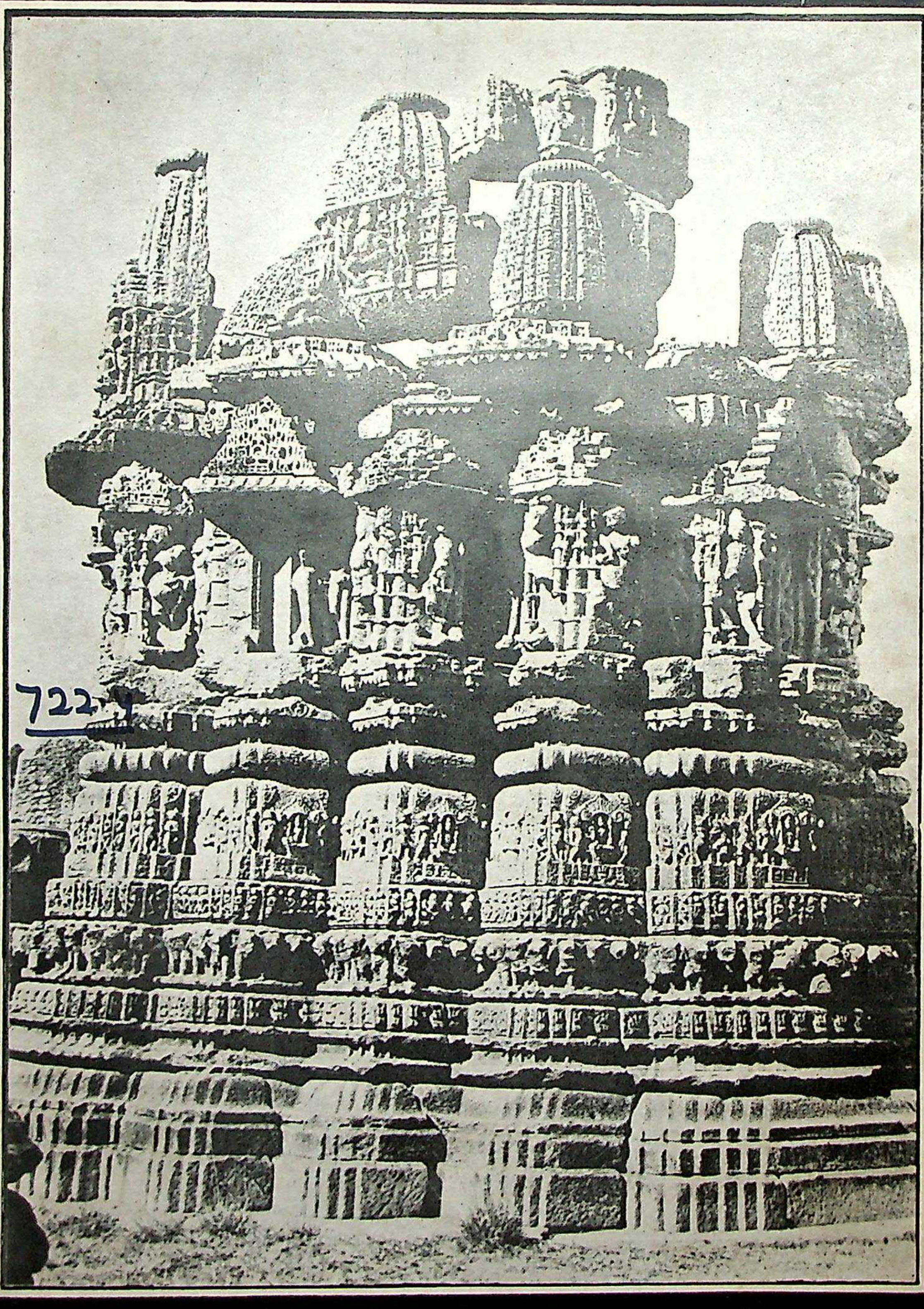

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ध्यानम्

(मन्दिर वास्तु सम्बन्धी लेखों का संग्रह)

722.4

युवा परिभ्रमण एवं सांस्कृतिक समिति, उ० प्र०, लखनऊ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

© प्रकाशक

प्रथम संस्करण १९८१

प्रबन्ध सम्पादक
डा० शरद नागर

5309

कला पक्ष
प्रेम कुमार शर्मा

मुद्रक
इण्डस्ट्रियल प्रिंटिंग वर्क्स,
273, रानीगंज
लखनऊ—226 004
फोन : 46410

प्रकाशक
युवापरिभ्रमण एवं सांस्कृतिक समिति, उ० प्र०
5 बलरामपुर छात्रावास, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

1905—1979

हाकी के जादूगर

पद्मभूषण मेजर ध्यानचन्द जी

की

पुण्य स्मृति में समर्पित

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भूमिका

उत्तर प्रदेश की वास्तुकला से सम्बन्धित प्रकाशनों के संसार में **ध्यानम्** का प्रवेश स्वागतार्ह है। **ध्यानम्** प्राचीन भारतीय वास्तुकला के अछूते से परन्तु मनोहर अलिन्द में प्रवेश कराता है। भारतीय वास्तुकला के विषय में राष्ट्र-भाषा में लिखी सामग्री का जितनी अधिक मात्रा में उपलब्ध हो, स्वागत ही किया जाना चाहिए। अंग्रेजी में तो इस विषय पर कई ग्रन्थ निकल चुके हैं और नये भी प्रकाशित हो रहे हैं, उनकी बाजार में खपत भी ऊँचे दामों पर खूब हो रही है परन्तु हिन्दी में सुरुचिपूर्ण ढंग से सजाये गये स्तरीय प्रकाशनों की बड़ी कमी है। एक अंश में **ध्यानम्** उस कमी की पूर्णता करता है।

हिन्दू संस्कृति में मन्दिर का विशेष महत्व है। यहाँ छोटे-बड़े देवायतनों का बाहुल्य रहा है। कुषाण काल का नाग मन्दिर तो मिल चुका है, पर अन्य मन्दिरों के विषय में हमारी जानकारी अधिक नहीं है। गुप्त काल के कतिपय सुन्दर मन्दिर हमें ज्ञात हैं। मध्यकाल में देव संघ की वृद्धि के साथ-साथ देव मन्दिरों की संख्या में वृद्धि भी स्वाभाविक थी। इस विषय से सम्बन्धित अनेक लक्षण ग्रन्थ बने, पारिभाषिक शब्दावलियाँ सामने आयीं और स्पष्ट है कि तत्कालीन सभ्यता में उन शब्दों का खुलकर प्रयोग भी हुआ होगा। धीरे-धीरे इन शब्दों का स्थान देशी भाषा के शब्दों ने ले लिया और अब भी ये देशी शब्द शिल्पकर्मियों के परम्परागत कुलों में चलते आ रहे हैं। **ध्यानम्** में मध्यकालीन पारिभाषिक शब्दावली का खुलकर प्रयोग किया गया है। फलतः विवेच्य अंश कहीं-कहीं बोझिल हो गया है परन्तु एक सीमा तक वह लेख इस दोष का परिमार्जन कर देता है, जिसमें पारिभाषिक शब्दों की सचित्र व्याख्या की गई है।

ध्यानम् में कुल सात लेख हैं। विशेष हर्ष की बात है कि यह सभी युवक शोध कर्ताओं द्वारा लिखे गये हैं। इन लेखों के माध्यम से लेखकों ने अल्मोड़ा, चमोली, टिहरी, मिर्जापुर, सीतापुर, सीधी आदि जिलों के परिसर में स्थित कुछ ऐसे मन्दिरों का सचित्र परिचय दिया है, जो अब तक अज्ञात या अल्पज्ञात थे। लेखकों ने अपने शोध कार्य के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्तर्गत स्वयं उन्हें देखा, परखा और उनका परिचय स्थापित किया है। इनमें से कुछ युवा लेखक उ० प्र० राज्य पुरातत्व विभाग से सम्बद्ध हैं और इसलिए समुचित सुविधाएं तथा उत्साह देने के लिए पुरातत्व विभाग भी स्पृहणीय है।

यह सभी जानते हैं कि कागज, छपाई, ब्लाकों की बनवायी आदि की दरें नित्य ही बढ़ती जा रही हैं, जबकि इस प्रकार के प्रकाशनों के साधन सीमित होते हैं। ऐसी स्थिति में स्पष्ट है कि विदेशी भाषाओं के प्रकाशनों को परखने वाली आँखों को **ध्यानम्** की कई कमियाँ खटकने लगें। परन्तु जहाँ सूर्य का प्रकाश नहीं पहुँच पाता, वहाँ दियरी की टिमटिमाहट ही मार्ग दिखाती है।

हम **ध्यानम्** का स्वागत करते हैं, तरुण शोध छात्रों का अभिनन्दन करते हैं।

नीलकण्ठ पुरुषोत्तम जोशी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय सूची

1. देवालय परिचय	अमर सिंह	1
2. नसीराबाद के इष्टिका मन्दिर	अमर सिंह, राकेश तिवारी	9
3. नारायण कोटी का नौला	स्थविर	15
4. मैहर का कलचुरि कालीन मन्दिर	तहसीलदार सिंह	19
5. बमन सुआल के प्राचीन मन्दिर	राकेश तिवारी	25
6. भरहरी मन्दिर	कुँवर	31
7. भिलंगना घाटी के प्राचीन मन्दिर	बुद्धि प्रकाश बडोनी	35
8. पारिभाषिक शब्दावली	– – – –	41
9. अनुक्रमणिका	– – – –	44

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आभार

मैहर के कलचुरि कालीन मन्दिर के अन्तर्गत उपयोग में लाए गए चित्रों के लिए अमेरिकन इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डियन स्टडीज, रामनगर, वाराणसी; बमन सुआल के मन्दिरों पर लेख के प्रकाशन की स्वीकृति प्रदान करने हेतु उ० प्र० राज्य पुरातत्व संगठन, लखनऊ और प्रथम लेख के रेखा-चित्रों के लिए श्री बलराम कृष्ण श्रीवास्तव के आभारी हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देवालय परिचय

अमर सिंह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भक्त अपने आराध्यदेव के प्रति आस्था प्रदर्शित करने के लिए किसी **देवालय** का निर्माण करवाता है और उसमें देवता की मूर्ति स्थापित करता है। मन्दिर या देवालय की तुलना मनुष्य के शरीर से की गयी है। जिस प्रकार शरीर में **पाद, जंघा, कंठ, सिर,** आदि अनेक अंग होते हैं, उसी प्रकार मन्दिर में भी **पाद, जंघा, कंठ, सिर,** और **शिखर** आदि अनेक अंग प्रदर्शित किए जाते हैं। जैसे आत्मा के बिना शरीर निर्जीव हो जाता है वैसे ही गर्भगृह में प्रतिमा के बिना मन्दिर का भी कोई महत्व नहीं रहता। वस्तुत: मन्दिर वह स्थान है, जहां विश्व की अन्तरात्मा साकार रूप में निवास करती है। इसे देवालय, देवायतन, देवगृह आदि नामों से सम्बोधित किया जाता है।

भारत में मन्दिर-निर्माण परम्परा का प्रादुर्भाव कब और कैसे हुआ, इस संदर्भ में निश्चयपूर्वक कह सकना कठिन है। कुछ विद्वान् मन्दिरों की उत्पत्ति की पृष्ठभूमि में यज्ञ-वेदी, स्तूप, पर्वत, वृक्ष आदि को मानते हैं। प्राचीन काल में यक्ष, नाग, भू-देवी तथा अन्य अनेक देवी-देवताओं की पूजा-उपासना प्रचलित थी। उनकी मूर्तियां बनाई जाती थीं और उन्हें किसी वृक्ष के नीचे चबूतरा बना कर स्थापित कर दिया जाता था। बहुत सम्भव है कि मन्दिर के उद्‌भव में यज्ञवेदिका और इन चबूतरों का प्राचीन स्वरूप सहायक रहा हो।

यद्यपि मन्दिरों के अस्तित्व के संकेत प्रथम तथा द्वितीय शती ई० पू० (अब से लगभग 2,200 वर्ष पहले) के अभिलेखों में स्पष्ट रूप से मिलने लगता है किन्तु उन मन्दिरों के नष्ट हो जाने के कारण उनका वास्तविक स्वरूप अज्ञात है। भरहुत, मथुरा और बोधगया से प्राप्त कुछ उच्चित्रों को देखने से ऐसा लगता है कि शुंग काल में देवालय वर्गाकार और आयताकार होते थे और उन पर क्रमश: गोल एवं गजपृष्ठाकृति छत निर्मित की जाती थी।[1]

कतिपय उदाहरणों को छोड़कर मन्दिरों के स्पष्ट व सुन्दर प्रमाण हमें गुप्त काल से मिलते हैं। इस समय तक मन्दिरों के निर्माण के लिए पाषाण का प्रयोग प्रचुर मात्रा में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किया जाने लगा था । इसके अतिरिक्त समाज में ईश्वर के प्रति सगुणोपासना बहुत अधिक लोकप्रिय हो गयी थी, जिससे आराध्य देवों के प्रति भक्ति प्रदर्शित करने के लिए उत्तर, मध्य तथा दक्षिण भारत में बड़ी संख्या में मन्दिर निर्मित किए गये । इन मन्दिरों का निर्माण एक ऊँची जगती पर किया गया है । प्रारम्भ में इनकी छतें चपटी निर्मित की गयीं किन्तु कालान्तर में उनके स्थान पर शिखर-निर्माण की परम्परा आरम्भ हुई । मन्दिरों में चौकोर गर्भगृह तथा उसके सामने स्तम्भ युक्त अर्द्धमण्डप मिलता है । इनका भीतरी भाग सादा है किन्तु प्रवेश-द्वारों को पर्याप्त रूप से अलंकृत किया गया है । इनकी चौखट पर मकरवाहिनी गंगा तथा कूर्मवाहिनी यमुना के साथ **गण, मिथुन, द्वारपाल, मांगल्यविहग, श्रीवृक्ष, स्वास्तिक, पूर्णघट, पुष्प-पत्र, व्याल, कीर्ति-मुख,** आदि शुभ अभिप्रायों को चित्रित किया गया है । गुप्त-कालीन मन्दिरों की ये विशेषताएं परवर्ती काल के मन्दिरों में भी परम्परागत रूप में देखने को मिलती हैं ।

पूर्व मध्यकाल और मध्यकाल में मन्दिरों के आकार-प्रकार, उनके विभिन्न अंगो तथा अलंकरण में पर्याप्त वृद्धि हुई । इसके साथ ही साथ इस समय तक अनेक वास्तु एवं शिल्प शास्त्रीय ग्रन्थों की भी रचना की गयी, जिनमें मन्दिरों के विभिन्न अगों और उनके अलकरण से सम्वन्धित तत्कालीन पारिभाषिक शब्दों का खुलकर प्रयोग हुआ । निश्चय ही ये ग्रन्थ उस समय के शिल्पियों एवं स्थपतियों द्वारा निदेशिका के रूप में प्रयुक्त होते रहे होंगे । आज यही ग्रन्थ उपलब्ध वास्तु एवं शिल्प कलाकृतियों का परिचय देने के लिए महत्वपूर्ण हैं ।

किसी भी मन्दिर की निर्माण-योजना का अध्ययन दो दृष्टियों से किया जा सकता है :—

1. तलछन्द योजना,
2. ऊर्ध्वछन्द योजना ।

तलछन्द-योजना में मन्दिरों का धरातल पर जो विस्तार होता है, उसके प्रमुख अंग आते हैं जबकि ऊर्ध्वछन्द- योजना में मन्दिर के ऊपरी विस्तार का विवरण प्रस्तुत होता है ।

तलछन्द-योजना की दृष्टि से मन्दिर को निम्नलिखित प्रमुख भागों में विभक्त किया जा सकता है ।

1. **गर्भगृह**—जहां मुख्य देवता की प्रतिमा स्थापित होती है ।
2. **अन्तराल** या **कपिली**—गर्भगृह और मण्डप के मध्य का भाग ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

3. **गूढ़ मण्डपः**—गर्भगृह के सामने दीवारों से ढका हुआ मण्डप ।

4. **मण्डप या रंग मण्डप** (नृत्य मण्डप):—सगोष्ठी, नृत्य, गायन, वादन आदि के लिए निर्मित स्तम्भों पर आधारित खुला मण्डप ।

5. **मुखमण्डपः**—दो या चार स्तम्भों पर आधारित एक अन्य आच्छादित मण्डप । (रेखाचित्र सं० 3)

ऊर्ध्वछन्द योजना की दृष्टि से मन्दिर को प्रमुखतः तीन निम्नलिखित भागों में विभक्त कर सकते हैं :—

1. **अधिष्ठान या जगती ।**

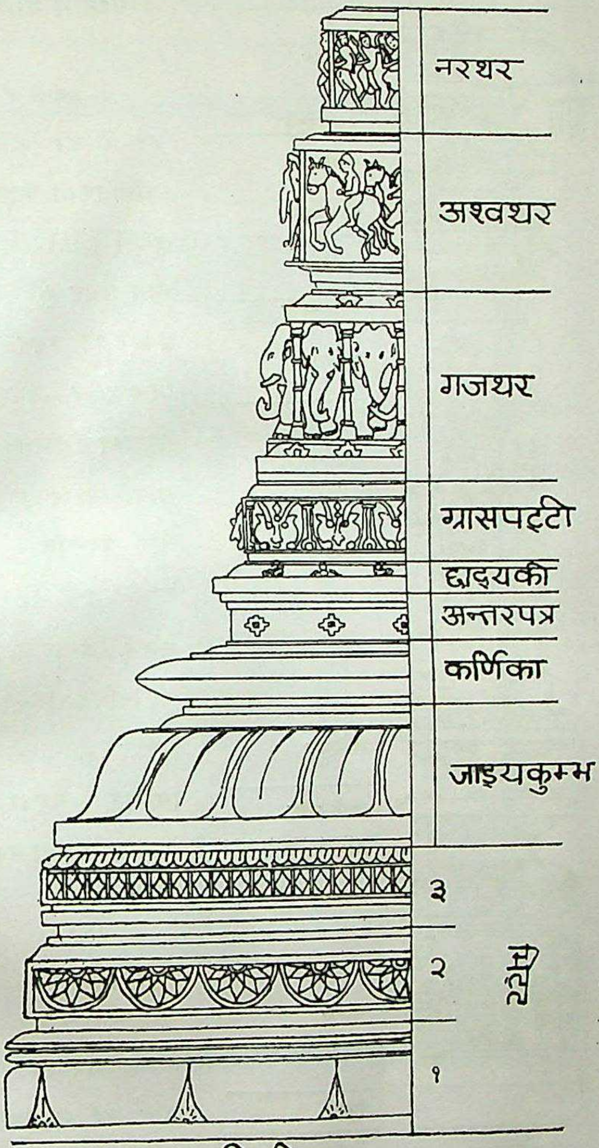

जगती पीठ

रेखाचित्र सं० 1.

2. **मण्डोवर**–मध्य भाग या जंघा भाग,

3. **शिखर** ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

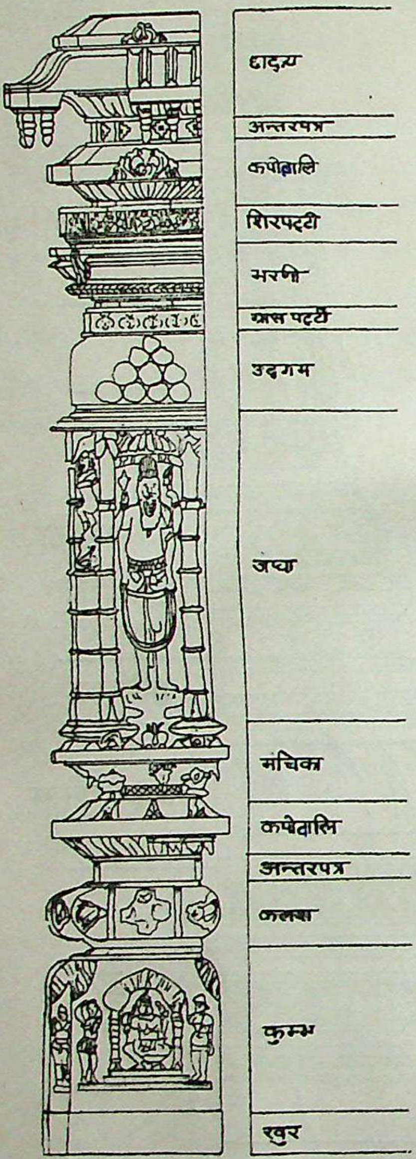

मण्डोवर

रेखाचित्र सं० 2

अधिष्ठान या जगती:—

जगती की रचना मन्दिर के आसन के रूप में की जाती है। जिस प्रकार कोई व्यक्ति किसी चबूतरे पर खड़ा होता है वैसे ही जगती के ऊपर मन्दिर अपने सम्पूर्ण गौरव के साथ स्थित होता है। **प्रासाद मण्डन** में पाँच प्रकार की जगती या अधिष्ठान का उल्लेख मिलता है—चतुरस्र (वर्गाकार), आयत, अष्टास्र (अष्टकोणीय), वृत्त और वृत्तायत।[2] सामान्यत: जगती को **जाड्यकुम्भ, कर्णिका,** और **पद्मपत्र** के साथ **ग्रासपट्टी** से सजाने का निर्देश है किन्तु उसके ऊपर खुर, **कुम्भ, कलश, अन्तराल, कपोतालि** और **पुष्पकण्ठ,** भी निर्मित किए जा सकते हैं।[3] विशिष्ट स्थिति में इसके ऊपर **गजथर, अश्वथर, सिंहथर, नरथर,** और **हंसधर,** भी अलंकृत किए जा सकते हैं।[4] (रेखाचित्र सं० 1)।

मण्डोवर :—

देवालय के मध्य भाग या जंघा भाग को मण्डोवर कहते हैं। इसकी रचना जगती या प्रासादपीठ के ऊपर की जाती है। वास्तुशास्त्रीय ग्रन्थों में कई प्रकार के मण्डोवरों का उल्लेख मिलता है। **प्रासाद मण्डन** में **नागरशैली** के मण्डोवर के लिए कहा गया है कि उसे क्रमश: खुर, **कुम्भ, कलश, अन्तराल** (अन्तरपत्र या पुष्पकण्ठ), **कपोतालि**

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(केवाल), **मच्ची, जंघा, उरजंघा, भरणी, शिरावटी, कपोतालि, अन्तरपत्र** और **छज्जा** नामक तेरह थरों से अलंकृत करना चाहिए (रेखाचित्र सं० 2)।

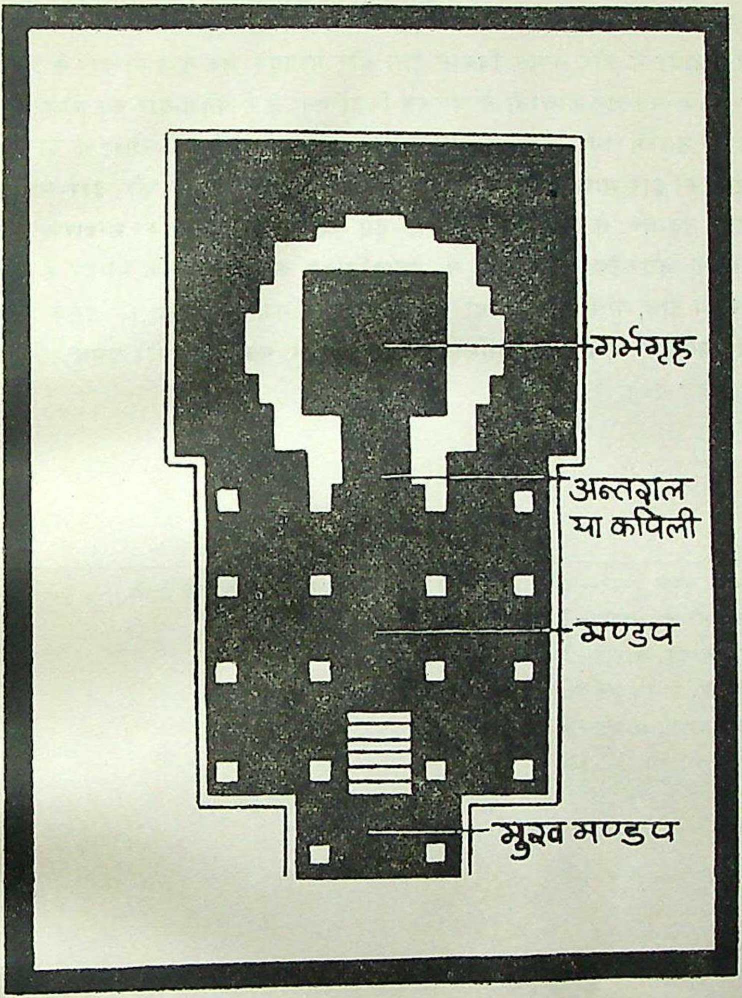

रेखाचित्र सं० 3

शिखर :–

गर्भगृह को आच्छादित किए हुए देवालय के सबसे ऊपरी भाग में शिखर होता है। शिखर की रचना मण्डोवर के छज्जा के ऊपर की जाती है। इसके ऊपर **अमलसारिका, कलश, बिजौरा** आदि स्थापित किए जाते है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रवेश द्वार :–

मन्दिर के गर्भगृह के प्रवेश-द्वार को विभिन्न **द्वार-शाखाओं**, **प्रतिहारी**, **मांगल्यविहग**, तथा अन्य अनेक अलंकरणों से सजाने की परम्परा गुप्तकाल से ही चल पड़ी थी। कालान्तर में इनकी सजावट में और अधिक विकास हुआ और मध्ययुग तक कुछ मन्दिरों के प्रवेश-द्वारों को सात अथवा नव द्वार-शाखाओं से अलंकृत किया गया है। प्रवेश-द्वार की चौखट के ऊपरी **भारपट्ट** को **उत्तरंग** तथा नीचे की देहली को **उदुम्बर** कहते हैं। चौखट के दोनों बाजुओं की पट्टियों को **द्वार-शाखा**, उत्तरंग के मध्य में स्थित रथिका-बिम्ब को **द्वार-ललाट-बिम्ब** और नीचे उदुम्बर के बीच में निकले हुए अर्द्धचन्द्राकार भाग को **मन्दारक** कहते हैं। प्रवेश-द्वार के अलंकरण के संदर्भ में **वराहमिहिर** का कथन है कि मन्दिर के गर्भगृह के प्रवेश-द्वार को तीन, पाँच, सात अथवा नव शाखाओं से सजाना चाहिए। इसके अतिरिक्त नीचे **मांगल्यविहग**, **श्रीवृक्ष**, **स्वास्तिक**, **घट**, **मिथुन**, **पत्रवल्ली** और **प्रमथ** अंकित करने चाहिए (चित्र संख्या 11)।

---

1. अग्रवाल, पृथ्वी कुमार—गुप्त टेम्पुल आर्किटेक्चर, वाराणसी, 1968 पृष्ठ 5–8.
2. प्रासाद मण्डन, अध्याय–2, श्लोक–2.
3. प्रासाद मण्डन, अध्याय–2, श्लोक–11-13.
4. वास्तुसार, प्रासाद प्रकरण, श्लोक–2.
5. प्रासाद मण्डन, अध्याय–3, श्लोक–20-23.
6. बृहत्संहिता, 56, 12-15.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नसीराबाद के इष्टिका मन्दिर

अमर सिंह, राकेश तिवारी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अक्षांश 27° 16′ उ० और देशान्तर 80° 46′ पू०, उत्तर प्रदेश के सीतापुर जिले की तहसील सिधौली से 7 कि० मी० पश्चिम, सिधौली-मिश्रिख मार्ग पर, नसीराबाद और करपन गाँवों में ईंटों से निर्मित चार भग्न मन्दिर हैं। यहाँ पहुँचने के लिए लखनऊ अथवा सीतापुर से बस या रेलगाड़ी द्वारा सिधौली होकर जाना होता है।

नसीराबाद गाँव के निकट सिधौली-मिश्रिख मार्ग, एक प्राचीन टीले से होकर गुजरता है। इस टीले को प्राचीन बाड़ी से समीकृत किया जाता है। उसके पश्चिम और पूर्व में स्थित क्रमशः नसीराबाद और करपन गाँवों में दो मन्दिर समूह हैं। प्रथम मन्दिर समूह **अष्टिका-बाबा** या **आक्टीक-बाबा** और दूसरा समूह **कालप-देवी** मन्दिर कहा जाता है।

अष्टिका-बाबा समूह के चार मन्दिरों में से एक पूर्णतः नष्ट हो चुका है और एक की केवल तलछन्द योजना ही बची है। यह मन्दिर **पञ्चरथ** रहा होगा। बड़े मन्दिर के **शिखर** और **कपिली** का बड़ा भाग गिर चुका है। छोटा मन्दिर अपेक्षाकृत पूर्ण है। **पञ्चायतन** प्रकार के **कालप-देवी** समूह के शेष दोनों मन्दिरों के **शिखर** और अग्रभाग भी ध्वस्त हो चुके हैं। फिर भी अवशिष्ट भाग से मन्दिरों की शैली आदि का पर्याप्त ज्ञान हो जाता है। इन सभी मन्दिरों में वर्गाकार **गर्भगृह** के आगे **कपिली** का निर्माण किया गया है।

कालप-देवी समूह के बड़े मन्दिर (चित्र संख्या-1) के गर्भगृह की माप 4·50 वर्ग मी० है। इस मन्दिर में एक **जगती** के ऊपर **खुर**, लम्बा **कुम्भ**, फुल्ल से अलंकृत **कलश** और चन्द्रशालाओं से सज्जित **कपोत** द्वारा **वेदीबन्ध** का निर्माण किया गया है। इसके ऊपर पञ्चरथ जंघा का **भद्र** भाग, अलंकृत अर्द्धस्तम्भों एवं **उद्गम** युक्त **रथिका** से, **प्रतिभद्र** लम्बे **उद्गमों** से तथा **कर्ण** अर्द्धस्तम्भों से सुशोभित हैं। अर्द्धस्तम्भों का आधार और शीर्ष भाग **घट-पल्लवों** और मध्य भाग एक फुल्ल-पट्टी से अलंकृत है। **जंघा** के ऊपर **नागर** शैली का **पञ्चरथ रेखा शिखर** निर्मित है। शिखर के भद्र भाग में नीचे एक रथिका पर **भूमि-आमलक** के ऊपर एक घट तथा उसके दोनों ओर एक-एक और **भूमि-आमलक** प्रदर्शित किए गये हैं। **मूलमञ्जरी** चन्द्रशालाओं से अलंकृत है। इसके अतिरिक्त **कर्ण** और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रतिभद्र भी चन्द्रशालाओं से युक्त **उद्गमों** से सज्जित हैं। **शिखर** और **जंघा** को दो सादी पट्टियों के मध्य चन्द्रशालाओं से सज्जित **अन्तरपत्र** द्वारा विभक्त किया गया है। संभवत: **कपिली** के ऊपर **शुकनास** भी बनाई गयी होगी, जो अब पूर्णत: नष्ट हो गयी है। यह मन्दिर उत्तराभिमुख है। इसके पश्चिमोत्तर कोने पर एक अन्य छोटा मन्दिर पूर्वाभिमुख स्थित है। इस मन्दिर के **गर्भगृह** की माप 2·25 वर्ग मी० है। यह एक ऊँची **जगती** पर बनाया गया है। इसका **वेदीबन्ध खुर, कुम्भ, कलश, अन्तरपत्र** एवं चन्द्रशालाओं से सज्जित **कपोत** द्वारा निर्मित है। उसके ऊपर भद्र भाग में **उद्गम** युक्त **रथिका** से अलंकृत **त्रिरथ जंघा** का निर्माण किया गया है। मन्दिर के त्रिरथ रेखा शिखर का भद्र भाग अलंकृत **उद्गमों** से और **कर्णभाग** सादी पट्टियों से सज्जित है। इसी प्रकार के तीन अन्य मन्दिर पूर्वोत्तर, दक्षिण-पूर्व और दक्षिणी-पश्चिमी कोनों पर भी स्थित रहे होंगे। इस प्रकार यह कालप-देवी मन्दिर **पञ्चायतन** प्रकार का प्रतीत होता है। रचना शैली के आधार पर इसे लगभग 10 वीं श० ई० के आस-पास रखा जा सकता है।

अष्टिका-बावा समूह के बड़े मन्दिर (चित्र संख्या-2) के **गर्भगृह** की माप 5·20 वर्ग मी० है। **ऊर्ध्वछन्द योजना** की दृष्टि से इस मन्दिर में **खुर, कुम्भ, कलश, मणिबन्ध** आदि अलंकरणों से सज्जित **अन्तरपत्र** और विभिन्न वानस्पतिक आकृतियों से अलंकृत **कपोत** द्वारा **वेदीबन्ध** का निर्माण किया गया है। **वेदीबन्ध** के भद्र भाग को अलंकृत **उद्गमों** द्वारा सज्जित किया गया है। **वेदीबन्ध** के ऊपर पंखुड़ियों का अलंकरण सुशोभित है। **पञ्चरथ जंघा** के भद्र में अलंकृत **उद्गम** युक्त **रथिका** है। रथिका के दोनों ओर अलंकृत अर्द्धस्तम्भ प्रदर्शित हैं। **प्रतिभद्र** को भी अर्द्धस्तम्भों से सुशोभित किया गया है। अर्द्धस्तम्भों के नीचे का भाग चौकोर और मध्य व शीर्ष भाग क्रमश: अलंकारिक डिजाइनों एवं **घटपल्लवों** से युक्त है। कर्ण भाग को **मणिबन्ध उद्गमों** व अन्य अलकरणों द्वारा सजाया गया है (चित्र संख्या- 4)। जंघा भाग के ऊपर **नागर** शैली का **पञ्चरथ रेखाशिखर** है। शिखर का भद्र भाग नाना प्रकार की गढ़नों से युक्त लतायुग्मों से सज्जित है। प्रतिभद्र और कर्ण भी उसी प्रकार अलंकृत हैं। शिखर का कर्ण भाग **भूमि-आमलकों** से विभक्त है। इसी प्रकार भद्र भाग के कर्ण भी **भूमि-आमलकों** से सजाये गये हैं। **कपिली** के ऊपर बनी **शुकनास** और **शिखर** का शेष भाग नष्ट हो चुका है। मन्दिर उत्तराभिमुख है।

अष्टिका-बावा समूह के बड़े मन्दिर के सामने दक्षिणाभिमुख छोटा मन्दिर स्थित है (चित्र संख्या-3)। इसके **गर्भगृह** की बाहरी माप 2·50 वर्ग मी० और भीतरी माप 1·05×1·00 मी० तथा **कपिली** की भीतरी माप ·65×·85 मी० है। मन्दिर का **वेदीबन्ध** सादे **खुर, कुम्भ, कलश, अन्तरपत्र** एवं चन्द्रशालाओं से अलंकृत **कपोत** द्वारा सज्जित है। मन्दिर का **जंघा** भाग सादा है। उसके भद्र भाग में सादी **उद्गम** युक्त **रथिका**

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रदर्शित है। **जंघा** के ऊपर **नागर** शैली का **पञ्चरथ** रेखा **शिखर** है। शिखर के कर्णभाग को पाँच **भूमि-आमलकों** से विभाजित किया गया है। उसके ऊपर का भाग भग्न है। इस मन्दिर को बड़े मन्दिर की तरह अलंकरणों द्वारा सजाया नहीं गया है।

मन्दिर के गहरे पेंचदार अलंकरणों और प्लास्टर के प्रयोग आदि से ऐसा प्रतीत होता है कि अष्टिका-बाबा समूह के मन्दिर लगभग 12-13 वीं श० ई० में निर्मित किये गये होंगे। इनमें प्रयुक्त प्लास्टर मन्दिरों के निर्माण के साथ ही किया गया प्रतीत होता है। कालप-देवी समूह के मन्दिरों का निर्माण अपेक्षाकृत पहले किया गया। बाद में जीर्णोद्धार एवं सुरक्षा की दृष्टि से उनमें भी प्लास्टर का प्रयोग हुआ है। बहुत सम्भव है कि यह कार्य अष्टिका-बाबा मन्दिरों के निर्माण के समय ही किया गया हो।

मन्दिरों की प्रतिमाएं लुप्त हो गयी हैं। कुछ खण्डित प्रतिमाएं गाँव में यत्र-तत्र नये मन्दिरों व पेड़ों के नीचे रखी हैं। इनमें से करपन गाँव के पश्चिम में पेड़ के नीचे रखी पाषाण निर्मित शिव की **कल्याण सुन्दर** प्रतिमा (माप ·65×·50 मी०) विशेष उल्लेखनीय है (चित्र संख्या-5)। इसमें शिव-पार्वती परिणय का दृश्य अंकित है। पार्वती-शिव के दाएं दिखाई गयी हैं। नीचे बीच में **ब्रह्मा** व **अग्नि** के दर्शन होते हैं। साथ में **कार्तिकेय, गणेश** आदि अन्य देवी-देवता भी स्थित हैं। चरण-चौकी पर वादक, नर्तक और शिवगणों का अंकन है।

गुर्जर-प्रतिहारकालीन मन्दिरों की परम्परा में ईंटों से निर्मित ये मन्दिर नसीराबाद क्षेत्र में इष्टिका मन्दिरों का प्रतिनिधित्व करते हुए भीतरगांव (कानपुर) के सुविख्यात इष्टिका मन्दिर के आगे की कड़ी जोड़ते हैं। पाषाण मन्दिरों पर मिलने वाले विभिन्न कलात्मक अलंकरणों की अनुकृतियां भीतरगाँव, सिरपुर, तिन्दुली व अन्य इष्टिका मन्दिरों की तरह नसीराबाद के मन्दिरों में भी दृष्टव्य हैं। इनमें अलंकरणों को पहले ईंटों पर काट कर, फिर ऊपर से प्लास्टर किया गया है, जिससे अलंकरण और अधिक गहरे व आकर्षक हो गये हैं। उल्लेखनीय है कि मन्दिरों में बनी चन्द्रशालाओं की सजावट पत्र-वल्लियों से की गयी है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नारायण कोटी का नौला

स्थविर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मानव जीवन की प्रमुख आवश्यकताओं में से एक जल भी है। इसीलिए सारे विश्व में **जल-स्रोतों** के निकट ही मानवीय आवास स्थापित हुए। इसकी महत्ता ने इसे दैवीय रूप प्रदान किया और नदियों, जलाशयों व जल-स्रोतों की पूजा होने लगी। मन्दिरों का निर्माण भी प्रायः जल-स्रोतों के निकट किया गया और उसके द्वार पर जल या नदी की प्रतीक कलशधारिणी **मकर वाहिनी गंगा** और **कच्छप वाहिनी यमुना** को स्थान मिला। इसी परम्परा में जल-स्रोतों को मन्दिरों का रूप प्रदान करने की विधा भी प्रारम्भ हुई। **गर्भगृह** में जल, जो जीवन, रस, ज्ञान व पवित्रता का प्रतीक है और **वरुण** देव को स्थान मिला। देवालयों के समान ही जल-स्रोतों के ऊपर **गर्भगृह, मण्डप** आदि का निर्माण करके उन्हें अलंकृत करने की परम्परा भी चल पड़ी जो मध्यकाल तक अपने चरम पर पहुँच गई।

उत्तराखण्ड, उत्तर-प्रदेश के गढ़वाल एवं कुमायूँ मण्डलों में आने वाले पर्वतीय जिलों में कई-कई गाँवों के मध्य एक ही जल-स्रोत होने के कारण उसका महत्व और अधिक हो गया। अतः इस क्षेत्र में बाट-बटिया के किनारे अनेक नौले, बाऊ या बावलियों का निर्माण किया गया। सामान्यतः इनमें जल-स्रोत के चारों ओर पाषाण-पट्टों की फर्श बनाकर **गर्भगृह** और उसके सामने दो स्तम्भो पर आधारित **मण्डप** बनाये गये हैं। कभी-कभी इनके **गर्भगृह** में वरुण आदि देवताओ की प्रतिमाएं भी स्थापित मिलती हैं। इनमें से कुछ नौले समकालीन वास्तु के सुन्दर नमूने हैं, यथा-चम्पावत व गंगोली हाट, जिला-पिथौरागढ़ के नौले किन्तु चमोली जिले में भेत गाँव या नारायण कोटी में स्थित पाषाण निर्मित नौला अलंकरण की दृष्टि से सिरमौर लगता है (चित्र संख्या-6)। यह अनुपम वास्तु गोपेश्वर से 86 कि० मी० और गुप्तकाशी से 3 कि० मी० की दूरी पर केदारनाथ मार्ग के दाएं नारायण कोटी या भेत गाँव के उत्तरी खेतों के मध्य स्थित है।

नौले का आधार (लगभग एक मीटर ऊँचा) **ग्रास-पट्टी, फुल्ल-पट्टी** और **भूमि-आमलकों** आदि से सज्जित है। जल-स्रोत के ऊपर **गर्भगृह** पर सामान्य **शिखर** है। उसके उत्तर व **दक्षिण** में दो-दो स्तम्भों और पूर्व में दो स्तम्भों व दो अर्द्धस्तम्भों पर आधारित **अर्द्धमण्डप** बनाए गए हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आयताकार **गर्भगृह** भीतर से मन्दिरों की बाह्य योजना के अनुरूप अलंकृत है (भीतरी माप 2·48 × 3·20 मी०)। नीचे से ऊपर की ओर इसे क्रमशः **जाड्यकुम्भ**, **कर्णिका**, चन्द्रशालाओं से अलंकृत **खुर**, **कुम्भ**, **कलश** और चन्द्रशाला पट्टी से सज्जित करके **जंघा** भाग में गायक-नर्तक वृन्द, शिव-उपासकों एवं नर-नारी आकृतियों से युक्त **रथिकाएं** और **वितान** में फुल्ल कमल उत्कीर्ण किए गए हैं। **पश्चिमी**, उत्तरी तथा दक्षिणी जंघा की अनुकृतियों के शिखर तीन-तीन **भूमि-आमलकों** से विभाजित हैं और मध्य में स्थित मन्दिर का शिखर **उद्गम** से अलकृत है।

गर्भगृह का पञ्चशाखा प्रवेश-द्वार पूर्वाभिमुख है। उसे **फुल्ल-शाखा**, **नाग-शाखा**, **खल्व-शाखा**, **फुल्ल-शाखा** एवं **स्तम्भ-शाखा** से अलंकृत किया गया है। **उत्तरंग** पर मध्य में नीचे **गणेश** और ऊपर भयावह **कीर्तिमुख** अंकित हैं (चित्र संख्या-7)। **उत्तरंग** की शीर्ष-पट्टी पर बाएं **ब्रह्मा** और दाएं **कार्तिकेय** के मध्य नवग्रह विराजमान हैं। शीर्ष पट्टी के नीचे **स्तम्भ-शाखा**, **गंगा-यमुना**, चतुर्भुजी **पार्वती**, **लक्ष्मी** (?), **मालाधर** एवं **मयूर** आदि से सज्जित है।

1·5 × 5·0 मीटर माप के **मण्डप** के स्तम्भ नीचे चौकोर, मध्य में अष्टकोणीय और ऊपर गोल हैं। शीर्ष पर चार तोड़े हैं। स्तम्भों के मध्य उन्हें जोड़ती हुई चार-चार तोड़ों से युक्त अलंकृत मेहराब या तोरण का निर्माण किया गया है। **मण्डप** के पश्चिमी, दक्षिणी तथा उत्तरी भाग भी **गर्भगृह** की भीतरी **जंघा** की तरह मन्दिर अनुकृतियों से शोभित हैं।

जल की शुद्धता बनाए रखने के लिए **जगती** के नीचे ही नीचे दो मकर-प्रणालियों का प्राविधान रखा गया है जो **जगती** के पूर्वी-दक्षिणी कर्ण के निकट खुलती हैं, जिससे मूल स्रोत तक पहुँचे बिना ही जल प्राप्त हो सकता है। वर्तमान समय में उपेक्षा के कारण नौले के स्रोत की जगह कीचड़ एकत्र हो जाने से पानी सूख गया है। नौले का पिछला भाग खेत की मिट्टी में दब गया है और छत में छेद हो गए हैं।

नौले की बाहरी माप लगभग ·85 × 5·70 × 3·5 मी० और जगती की चौड़ाई 3·25 मी० है। शैली की दृष्टि से नौला लगभग 13 वीं शती ई० में निर्मित प्रतीत होता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मैहर का कलचुरिकालीन मन्दिर

तहसीलदार सिंह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तर भारतीय पूर्व मध्यकालीन कला एवं स्थापत्य को समृद्ध करने में तत्कालीन कतिपय राजवंशों ने विशेष योगदान दिया, जिनमें कन्नौज के गुर्जर-प्रतिहार, जेजाकभुक्ति के चन्देल तथा डाहल-मण्डल के कलिचुर राजवंशों का महत्वपूर्ण स्थान है। उपर्युक्त तीनों राजवंशों में से कलचुरियों ने दीर्घकाल तक विस्तृत भू-क्षेत्र पर आधिपत्य स्थापित करके वहाँ की कला एवं स्थापत्य शैली को एक विशिष्ट क्षेत्रीय स्वरूप प्रदान किया। भारतीय कला एवं स्थापत्य के अन्तर्गत क्षेत्रीय शैलियों की स्थापना एवं विकास के इस युग में कलचुरियों ने विशेष रूप से मन्दिर-स्थापत्य को एक अभिनव आयाम प्रदान किया। इसी शैली को कतिपय विद्वानों ने डाहल-मण्डल शैली के नाम से अभिहित किया है। नवीं से लेकर 13 वीं शताब्दी तक अर्थात् लगभग 500 वर्षों के सुदीर्घकाल में उन्होंने बहुत से मन्दिरों का निर्माण करवा कर भारतीय स्थापत्य कला के पारम्परिक वैशिष्ट्य को पोषित करते हुए भी कतिपय नवीन शैलीगत विशिष्टताओं के प्रादुर्भाव एवं विकास को प्रश्रय दिया। चूंकि भारतीय मूर्तिकला और मन्दिरों का घनिष्ट सम्बन्ध है, अतः मन्दिर स्थापत्य के साथ-साथ मूर्तिकला का भी उल्लेखनीय विकास हुआ।

कलचुरियों के शासन क्षेत्र अर्थात डाहल-मण्डल के अन्तर्गत नागोद तथा मैहर की भूतपूर्व रियासतें, पन्ना का पूर्वी तथा रीवाँ का पश्चिमी भाग आदि आते थे। इस परिक्षेत्र में कलचुरिकालीन विविध स्मारक तथा उनके भग्नावशेष प्राप्त हुए हैं, जिनका अध्ययन भी कतिपय ग्रन्थों में प्रकाशित किया गया है। कनिंघम[1], आर० डी० बनर्जी[2], रहमान अली[3] और आर० के० शर्मा[4] आदि विद्वान लेखकों ने मैहर को शक्तिशाली एवं प्रभाव सम्पन्न कलचुरि नरेशों के राज्यसीमान्तर्गत आने वाले प्रमुख स्थानों में से एक माना है। यह स्थान मां शारदा देवी (ज्ञान की देवी सरस्वती) से सम्बन्धित होने के कारण सुविख्यात है। एक प्रस्तर पट्ट पर उत्कीर्ण लगभग 10 वीं शती की एक प्रशस्ति भी प्रकाशित हो चुकी है।[5] पर दुर्भाग्यवश **गोलामठ** नामक तथाकथित शैव मन्दिर (चित्र संख्या—8) का वर्णन उपर्युक्त किसी भी विद्वान ने नहीं किया है। यहाँ तक कि डी० आर० पाटिल ने मध्य भारत के पुरातात्विक स्मारकों की अपनी विवरणात्मक एवं वर्गीकृत सूची में भी इसकी गणना नहीं की।[6] मात्र कृष्ण देव ने अपनी पुस्तक **टेम्पुल्स आफ नार्थ इण्डिया** में इस

5309

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महत्वपूर्ण कलचुरिकालीन मन्दिर का अत्यन्त संक्षिप्त उल्लेख किया है।[7] सम्भवतः चूने एवं तेलरगों से पुते होने के कारण ही यह मन्दिर अब तक विद्वानों की दृष्टि से ओझल रहा। जबकि वास्तव में इस श्रेणी और काल के मन्दिरों में इसका एक विशिष्ट स्थान है। मराई, अमरकण्टक, चन्द्रेहे, नोहता तथा शहडोल (विराटेश्वर) के मन्दिरों के समान यह एक महत्वपूर्ण कलचुरिकालीन मन्दिर है। यह मन्दिर लगभग समूचा है और क्षतिग्रस्त होने से बच गया है। **जगती** तथा **मुखमण्डप** का जीर्णोद्धार निकट अतीत में ही किया गया है किन्तु प्रयुक्त वास्तु सामग्री अधिकांशतः प्राचीन एवं मौलिक ही है।

तलछन्द योजना की दृष्टि से यह एक **सप्तरथ** प्रासाद है। इसकी संरचना में प्रमुख अंग **गर्भगृह अन्तराल** तथा **मुखमण्डप** हैं। यह पूर्वाभिमुख मन्दिर एक सामान्य ऊंचाई (**लगभग एक मीटर**) की **जगती** पर स्थित है। **जगती** पर चढ़ने के लिए तीन दिशाओं (**पूर्व, उत्तर तथा दक्षिण**) में सीढ़ियां बनी हैं। गर्भगृह जगती के मध्य में स्थित है।

उर्ध्वछन्द को ध्यान में रखते हुए मन्दिर रूपी काया के विभिन्न अंग-उपांगों का वास्तुशास्त्रीय नामकरण **जगती, पीठ, वेदीबन्ध, जंघा, वरण्डिका** तथा **शिखर** आदि किया जा सकता है।

मन्दिर का सम्पूर्ण वाह्य भाग मूर्तियों एवं विविध रूपांकनों से अलंकृत है। **वेदीबन्ध** का अलंकरण **कुम्भ, कलश, अन्तरपट्ट** और **कपोत** द्वारा किया गया है। **कुम्भ** पर स्थान-स्थान पर (**निर्गमों पर**) नृत्य-संगीत में तल्लीन मानव आकृतियों का अंकन है। भद्र पर उत्तर में **पार्वती**, दक्षिण में **नृत्य-गणेश** एवं पश्चिम में **सूर्य** की मूर्तियाँ उत्कीर्ण की गयी हैं।

जंघा को मूर्तियों की दो पंक्तियों से सजाया गया है। नीचे की चौड़ी पंक्ति में **भद्र, सुभद्र, प्रतिरथ** एव **कर्ण** नामक निर्गम हैं। **भद्र** पर उत्तर में षोडसभुजी देवी सम्भवतः **दुर्गा?** दक्षिण में गजासुर संहारक **शिव** और पश्चिम में अष्टभुजी **सरस्वती** विराजमान हैं। इनके समानान्तर ही **सुभद्रों** एवं **प्रतिरथों** पर विभिन्न ललित मुद्राओं में नायिकाएं उत्कीर्ण हैं, जबकि **कर्णों** पर **अष्टदिक्पाल** अपने-अपने शास्त्रविहित कोणों पर **समपादमुद्रा** में खड़े मानो देवा-यतन की रक्षा कर रहे हैं। दोनों पंक्तियों के बीच में एक **कीर्तिमुखों** से सज्जित **ग्रासपट्टी** विभाजक रेखा का काम करती है। **सलिलान्तरों** में **व्यालों** को प्रदर्शित किया गया है।

कपिली पर उत्तर में **क्षेमंकरी** एवं दक्षिण में **कार्तिकेय**, भद्र के समान ही अलंकृत रथिकाओं में शोभायमान हैं। यहाँ पर **सलिलान्तरों** के **व्यालों** के स्थान पर **अप्सराओं** का अंकन दर्शनीय है। उत्तरी पंक्ति में मिथुन मूर्तियाँ विविध शृंगारिक मुद्राओं में प्रदर्शित हैं। इनको एक उत्फुल्ल कमल पर खड़े दिखाया गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जंघा के ऊपर **वरण्डिका** है। इसको चार गढ़नों एवं तीन **अन्तरपत्रों** से सजाया गया है। द्वितीय एवं चतुर्थ गढ़नों को **वेदीबन्ध** के **कपोत** की भांति ही लघु **चन्द्रशालाओं** से अलंकृत किया गया है, जबकि तीसरी ओर एक **बसन्तपट्टिका** के रूप में उत्कीर्ण है।

जंघा के सभी उदय **वरण्डिका** के ऊपर जाकर **शिखर** का निमार्ण करते है। यह **सप्तरथ शिखर** नव भूमि प्रकार का है। **कर्णरथों** पर बने **आमलसारों** से नव विभाग स्पष्टतः गिने जा सकते हैं। शिखर की लताओं को **चन्द्रशाला-जालक** से आभूषित किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि **ग्रीवा** के ऊपर का भाग कभी खण्डित हो गया था परन्तु उसे मौलिक **आमलक** और **बीजपूरक** आदि से ही पुनः निर्मित कर दिया गया।

पूर्व दिशा (**अग्रभाग**) में **शिखर** के पाद पर **शुकनास** की संरचना की गयी है। यह ठीक **कपिली** के ऊपर स्थित है। **शुकनास** को अलकरण की दृष्टि से दो भागों में बांट सकते हैं, प्रथम-मध्यस्थ **चन्द्रशाला और** द्वितीय-दोनों पार्श्वों में एक-एक **कूटशृंग**। चन्द्रशाला में कोई मूर्ति नहीं है, जो कि सामान्य परम्परा के प्रतिकूल हो। इसके अतिरिक्त उत्तर तथा दक्षिण में **कूटशृंगों** के दोनों पार्श्वों में एक-एक चामरधारिणी परिचारिकाएं खड़ी प्रदर्शित हैं।

आधुनिक चबूतरे के ऊपर प्राचीन **स्तम्भों, अर्द्ध स्तम्भों, भारपट्टों और वितान** प्रयोग करके **मुखमण्डप** का निर्माण किया गया है। **मुखमण्डप** के स्तम्भों को अलंकरण की दृष्टि से **कुम्भक, यष्टि** और **भरणी** नामक तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है। **कुम्भक** का आकार अष्टकोणीय है, जिसे चार गढ़नों से अलंकृत किया गया है। **यष्टि** का नीचे का भाग अष्टफलीय, मध्य का षोडसफलीय और ऊपर का भाग वृत्ताकार **है**। **भरणी** को तीन वृत्ताकार गढ़नों से सजाया गया है। उसके ऊपर का शीर्षक चार **विद्याधर-मिथुन** आकृतियों से अलकृत है जिनके मध्य अञ्जलिहस्तमुद्रा में **नाग-नागिनियां** प्रदर्शित की गयी हैं। बहुधा स्तम्भों के शीर्षकों पर **भारपुत्रकों** का अंकन मिलता है किन्तु यहां उनके स्थान पर चतुर्भुजी **विद्याधर-मिथुन** दिखलाए गये हैं (चित्र सख्या 9)। वे अपने दो हाथों से **भारपट्ट** को सहारा दे रहे हैं तथा दो हाथों में नाना प्रकार के वाद्य-यन्त्र, जैसे-वंशी, **वीणा, माला, पुष्प, फल, ध्वजा** तथा अन्य पूजा-सामग्री धारण किये गये हैं। **मुखमण्डप** के **पद्मक वितान** के **विकर्णों** पर **कीर्तिमुखों** का अलंकरण है तथा केन्द्र में पूर्ण विकसित कमल उत्कीर्ण किया गया है (चित्र संख्या 10)। **भद्रक** प्रकार के **अर्द्ध स्तम्भों** की रचना बहुत कुछ स्तम्भों से मिलती जुलती है। इनके दोनों ओर चौरी और पद्म लिए त्रिभंग मुद्रा में चौरी धारियों का अंकन दर्शनीय है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गर्भगृह का प्रवेश-द्वार **पत्रलता, माला, स्तम्भ** और **खल्व** नामक चार द्वार-शाखाओं से अलंकृत है। पेद्य पर दो अनुचरियों के साथ कमलधारिणी **प्रतिहारी** का अंकन है। इसके अतिरिक्त बायीं ओर मकरवाहिनी **गंगा** तथा दायीं ओर कूर्मवाहिनी **यमुना** अपनी-अपनी अनुचरियों के साथ प्रदर्शित हैं। बायीं ओर के कोने पर **महाकाल** अपने रौद्र रूप में अंकित हैं। उनके केश **उर्ध्वपिंगल** हैं। वे बायें हाथ में **खट्वांग** और दायें हाथ में **कपाल** धारण किये हैं। दायें कोने पर सौम्यमुद्रा में **नन्दी** विराजमान हैं। वे बायें हाथ में **दन्ड** धारण किये हैं तथा दायां हाथ **वरदमुद्रा** में दिखलाया गया है। ये सभी प्रतिमाएं **त्रिभंग मुद्रा** में अंकित हैं। **उत्तरंग** पर **पत्रलता, माला** और **खल्वशाखा** के साथ-साथ उड़ते हुए **मालाधर-विद्याधर** तथा एक पक्ति में खड़े हुए **नवग्रह** और बैठी हुई **सप्तमातृकाएं हैं। ललाटबिम्ब** पर चतुर्भुजी **शिव अर्द्धपर्यंक आसन** में बैठे हैं। इनके दाहिने ऊपरी हाथ में **त्रिशूल** है तथा नीचे का दायां हाथ **वरदमुद्रा** में हैं। बायें एक हाथ में सम्भवतः **बीजपूरक** और दूसरे में **कपाल** लिए हैं। उनके बायीं और दायीं ओर **ब्रह्मा** और **विष्णु** अंकित हैं। **सप्तमातृकाओं** के एक ओर **बीणाधर वीरभद्र** तथा दूसरी ओर **गणेश** प्रदर्शित हैं। पेद्य के नीचे **उदुम्बर** को **नर्तक-वादकों** से भली-भांति अलकृत किया गया है। **मंदारक** के दोनों ओर **कुम्भ** लिए **उदधिकुमारों** का अंकन दर्शनीय है। **मंदारक** पर कमलनाल व पूर्ण विकसित पद्म का अलंकरण है। (चित्र सं० 11)

गर्भगृह का भीतरी भाग सादा है **वितान** की रचना **मुखमण्डप** के **वितान** के सदृश्य ही है। **गर्भगृह** में **पीठ** पर एक **शिवलिंग** स्थापित है, जिसकी उपासना आजकल मूलनायक के रूप में की जा रही है।

---

1. कनिंघम, आ० स० रि०, भाग-IX, पृ० 33 और भाग-VII, पृ० 50.
2. वनर्जी, आर० डी०, हैहयाज ऑफ त्रिपुरी एन्ड देयर मानूमेन्ट्स, मेम्वायर्स ऑफ आर्कियोलॉजिकल सर्वे आफ इण्डिया, नं० 23, कलकत्ता, 1931.
3. अली. रहमान, आर्ट एण्ड अर्किटेक्चर आंफ कलचुरीज, दिल्ली, 1980.
4. शर्मा, आर० के०, द कलचुरीज एण्ड देयर टाइम्स, दिल्ली, 1980.
5. एपीग्रेफिया इण्डिका, भाग—XXXV, पृ० 171.
6. पाटिल, डी० आर, क्लासीफाइड एण्ड डिस्क्रिप्टिव लिस्ट ऑफ मानूमेन्ट्स इन मध्य भारत।
7. कृष्णदेव, टेम्पल्स ऑफ नार्थ इण्डिया, पृ० 51, दिल्ली, 1969.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बमन सुआल के प्राचीन मन्दिर

राकेश तिवारी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अक्षांश 79० 3·49′ उत्तर, देशान्तर 29० 47·1′ पूर्व, कुमायूँ मण्डल के अल्मोड़ा नगर से (मोटर मार्ग) लगभग 41 कि० मी० दक्षिण-पूर्व, पट्टी मल्ला लखनपुर, पोस्ट-वानठौक, गांव बमन सुआल में सुआल नदी और थमिया के गदेरे (धारा) के संगम पर सोलह पाषाण निर्मित देवालय स्थित हैं। अल्मोड़ा से बस द्वारा लमगड़ा उतर कर 5 कि० मी० पैदल चलकर यहाँ पहुँचा जा सकता है।

गांव के दक्षिणी भाग में उत्तर-वाहिनी सुआल के बायें तट पर स्थित इन मन्दिरों को थमिया का गदेरा पुन: 5 और 11 मन्दिरों के दो समूहों में विभक्त करता है। ग्यारह मन्दिरों के समूह को ग्रामीण लोग **एकादश रुद्र** के नाम से सम्बोधित करते हैं। दूसरे समूह के मुख्य मन्दिर **त्रिनेत्रेश्वर महादेव** के नाम पर उसे **त्रिनेत्रेश्वर महादेव समूह** कह सकते हैं।

त्रिनेत्रेश्वर समूह के सभी मन्दिर पूर्वाभिमुख हैं। मुख्य मन्दिर सुआल नदी और थमिया के गदेरे से बने कोण पर स्थित है। तलछन्द योजना की दृष्टि से इसमें आयताकार गर्भगृह (बाहरी माप 1·28×1·59 मी०, भीतरी माप 1·0×0·75 मी०), **कपिली** या **अन्तराल** (बाहरी माप 0·22 मी० चौड़ा, भीतरी माप 0·40×0·66 मी०) और **मण्डप** (भीतरी माप 1·35 वर्ग मी०) का निर्माण किया गया है। मण्डप के आगे वर्तमान समय में एक और नवीन छोटा मण्डप तथा उत्तर दिशा में उससे लगी हुई छोटी भोगशाला भी बना दी गई है।

ऊर्द्धवछन्द योजना में मन्दिर का **वेदीबन्ध** चार सादी पट्टियों से अलंकृत है। उसके ऊपर सादा **जंघा** है। जंघा और शिखर की विभाजक सादी पट्टी पर एक मध्यकालीन ब्राह्मी लेख उत्कीर्ण है, जिसका आरम्भ इस प्रकार है-"**भट्टभवदतस्यधामा**..... .... ।" (चित्र संख्या 15)। उसके ऊपर एक **अन्तरपत्र** पर **स्कन्ध वेदी** निर्मित की गई है जिसके उत्तरी और दक्षिणी सिरे चन्द्रशालाओं से अलंकृत हैं जिसमें शिवलिंग प्रदर्शित है और उसके ऊपर **गजपृष्ठाकृति शिखर** सुशोभित है, जिसके दोनों सिरे त्रिमूर्ति युक्त **शूरसेनकों** से सुसज्जित हैं। शिखर के ऊपर एक दूसरे की ओर पीठ और उत्तर-दक्षिण दिशा में मुख किए दो **गज-सिंह हैं**। सम्पूर्ण शिखर पर्वतीय शैली के अनुरूप एक बड़े काष्ठ-निर्मित तिब्बती पैगोडा शैली के **छत्र** अथवा **कैनोपी** से आच्छादित है। **कपिली** और **मण्डप** के ऊपर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का भाग पुर्ननिर्मित है। **प्रवेश-द्वार** सादा है। **वेदीबन्ध, जंघा** और **शिखर** की ऊँचाई क्रमशः 0·58 मी०, 0·86 मी०, और 1·79 मी० है।

मण्डप में कुछ पाषाण-प्रतिमाएँ रखी हैं—(1) **शेषशायी विष्णु**—चतुर्भुजी, दो हाथ खण्डित, एक हाथ सिर के नीचे, एक में गदा। **पादसंवाहन मुद्रा** में प्रदर्शित लक्ष्मी, विष्णु की तरह, किरीट मुकुट, कुण्डल, हार आदि से अलकृत हैं। ऊपर की पट्टी में नवग्रह, नीचे अवतारों, युद्ध दृश्य तथा उससे भी नीचे व्याल, मत्स्य एवं उपासकों का अंकन है (माप 49×39 से० मी०)। ऐसी ही एक अन्य प्रतिमा भी यहाँ रखी है। (2) **लक्ष्मी-नारायण**—पद्म प्रभामण्डल से युक्त विष्णु के वक्ष पर कौस्तुभ और हाथों में शंख, पद्म व चक्र शोभित हैं, चौथा हाथ बायीं जंघा पर आसीन लक्ष्मी की कटि पर है। दोनों किरीट मुकुट, कुण्डल, हार, वनमाला आदि से अलकृत हैं। नीचे गरुण व उपासक और पाद पीठ पर एक अस्पष्ट लेख अंकित है। (3) इसके अतिरिक्त यहाँ उदीच्य वेशी कमलधारी **द्विभुजी सूर्य** और अस्पष्ट **महिषासुर मर्दिनी** की प्रतिमाएँ भी रखी हैं।

मुख्य मन्दिर के पीछे **कार्तिकेय मन्दिर** और **ऊमा-महेश मन्दिर** स्थित हैं। दोनों मन्दिरों में तलछन्द योजना की दृष्टि से गर्भगृह और अर्द्धमण्डप बनाए गए हैं, जिनकी बाहरी माप क्रमशः 1·41×1·33 मी०, 1·26×1·21 मी० और भीतरी माप 0·96×0·89 मी०, 0·83×0·82 मी० तथा 0·52×1·54, 0·46×1·41 मी० है।

ऊर्द्धवछन्द योजना में दोनों मन्दिरों में सामान्य **जगती** पर खुर, **कुम्भ, कलश** और सादी पट्टियों से युक्त **वेदीबन्ध** है। मन्दिर के त्रिरथ **जंघा** के ऊपरी भाग में एक चन्द्र-शाला पट्टी और **जंघा** व **शिखर** के मध्य सादे **अन्तरपत्र** प्रदर्शित हैं। उसके ऊपर कर्ण पर तीन **भूमि-आमलकों** से सुसज्जित, नागर-शैली के त्रिरथ **रेखा-शिखर, आमलक, बिजौरा** आदि शोभित हैं। **गर्भगृह** के आगे दो स्तम्भों पर आधारित **अर्द्धमण्डप** हैं। चौकोर **कुम्भिका** पर आधारित स्तम्भो का निचला भाग चतुष्कोणीय, मध्य भाग अष्टकोणीय, ऊपरी वृत्ताकार है तथा शीर्ष पर चार तोड़े हैं। **अर्द्धमण्डप** के ऊपर सादी **शुकनास** है। **प्रवेश-द्वार** सादे हैं। गर्भगृह में **शिवलिंग** (माप-ऊँ 0·57 मी०, व्यास 0·23 मी०) स्थापित हैं। गर्भगृह में **कार्तिकेय**, एक **जैन तीर्थंकर** और **उमा-महेश** की एक पूर्ण व एक खण्डित प्रतिमाएँ रखी हैं। मन्दिरों की ऊँचाई 4·5 मी० है।

मन्दिरों के बाहर खण्डित पाषाण-प्रतिमाओं के ढेर में रखी एक **जिन प्रतिमा** विशेष उल्लेखनीय है। इसका सिर और भुजाएँ टूटी हैं। वक्ष पर श्रीवत्स और चरण-चौकी पर चक्र और शंख हैं। शैली की दृष्टि से प्रतिमा पन्द्रहवीं-सोलहवीं शती० ई० की प्रतीत होती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उपरोक्त मन्दिरों के उत्तर स्थित उमा-महेश मन्दिर से सटा हुआ छोटा मन्दिर **बटुक-भैरव मन्दिर** कहलाता है। तलछन्द योजना की दृष्टि से इसमें आयताकार **गर्भगृह** (बाहरी माप-10·4×0·98 मी०, भीतरी माप 0·78×0·46 मी०) के सामने **कपिली** (0·17×0·60 मी०) बनाई गई है। ऊर्ध्वछन्द योजना की दृष्टि से सामान्य **जगती** पर सादा **जंघा भाग** और उसके ऊपर **एकाण्डक** रेखा शिखर बनाया गया है। उसके शीर्ष पर **आमलसारिका, बिजौरा** आदि सुशोभित हैं। **कपिली** के ऊपर सादी **शुकनास** है।

त्रिनेत्रेश्वर समूह के सबसे पूर्व में **हर-हर महादेव** नामक मन्दिर है। तलछन्द योजना की दृष्टि से इसमें वर्गाकार **गर्भगृह** (बाहरी माप 2·5×2·5 मी०, भीतरी माप 1·05×1 02 मी०) के सामने **कपिली** (बाहरी माप 0·30×1·44 मी०, भीतरी माप 0·72×0 72 मी०) और **मण्डप** (बाहरी माप ·95×2·96 मी०, भीतरी माप 2·05×1·28 मी०) बनाये गए हैं।

ऊर्द्धवछन्द योजना में तीन से पाँच भिट्ट की जगती पर तीन सादी गढ़नों से अलंकृत **वेदीबन्ध** के ऊपर सादा **जंघा-भाग** बनाया गया है। जंघा के पूर्वी कर्ण पर अस्पष्ट **लेख** उत्कीर्ण है। उसके ऊपर सादी पट्टियों से विभाजित नागर शैली का **फांसना रेखा-शिखर है।** शीर्ष पर **आमलसारिका** व **बिजौरा** शोभित हैं। **कपिली** या अन्तराल पर **शुकनास** है। प्रवेश द्वार के दोनों ओर के स्तम्भों के निम्न भाग में चन्द्रशालाओं के मध्य शिव मुखों का अंकन है। पुर्ननिर्मित छत वाले मण्डप में कुछ खण्डित प्रतिमाएं और शिवलिंग रखे हैं।

हर-हर महादेव से सटे हुए नवीन धर्मशाले का निर्माण प्राचीन मन्दिरों के अवशेषों से हुआ है। इसका **त्रिशाखा** प्रवेश-द्वार विशेष उल्लेखनीय है। **फुल्ल-शाखा, नाग-शाखा** और **मणिबन्ध-शाखा** युक्त इस द्वार में शाखाओं के नीचे त्रिशूलधारी शैव द्वार-पाल और **मकर** व **कच्छप** पर आरूढ़ कलशधारी **गंगा** एवं **यमुना** शोभित हैं। प्रवेश-द्वार के बांए लगे पाषाण पट्ट पर एक लेख उत्कीर्ण है। उसके पार्श्व में लगी एक बड़ी चन्द्रशाला (1·79×0·60-मी०) के लकुट धारी, ऊर्ध्वलिंगी, पद्मासन **लकुलीश** का अंकन किया गया है। अन्य अलंकृत पाषाण-खण्डों एवं स्तम्भों के **कीर्तिमुख, घट-पल्लव, मयूर, अर्द्ध पद्म, ताड़पत्र, पत्रवल्ली गढ़नों** तथा एक अन्य चन्द्रशाला की कलात्मकता दृष्टव्य है। इसी तरह के अलंकृत खण्ड त्रिनेत्रेश्वर मन्दिर के साथ बनी भोगशाला, प्रवेश-द्वार और गाँव के मकानों में लगे दिखते हैं। धर्मशाला के समीप ही एक विशाल आमलक (व्यास 1·30 मी०) और अन्य **भूमि-आमलक** भी पड़े हैं। ये अवशेष वर्तमान मन्दिरों के अतिरिक्त भी यहाँ अन्य प्राचीन मन्दिरों के रहे होने के यथेष्ट प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

'एकादश-रुद्र' समूह के 6 मन्दिर पूर्वाभिमुख और 5 पश्चिमाभिमुख हैं। सभी मन्दिर छोटे हैं और इनकी ऊँचाई लगभग 1·5 मी० से अधिक नहीं है। इनके गर्भगृह की बाहरी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

माप 1.0×1.0 मी० से 0.78×0.78 मी० है। इनका निर्माण भी भिट्ट की जगती पर किया गया है। तीन सादी गढ़नों से युक्त **वेदीबन्ध** पर **जंघा** बनाये गए हैं। कुछ मन्दिरों की जघा के कर्ण **घट-पल्लव, अर्द्ध पद्म, ताड़पत्र** आदि अलंकरणों से सुसज्जित हैं। एक मन्दिर के दक्षिणी **जंघा** भाग में एक अस्पष्ट लेख उत्कीर्ण है। जंघा के ऊपर एक सादी पट्टी से विभाजित **एकाण्डक** रेखा-शिखर है। शिखर भी सादी पट्टियों से सज्जित हैं। सबसे ऊपर **आमलसारिका** स्थित है। अधिकांश मन्दिर टूट-फूट गये हैं।

मन्दिरों के वास्तु अलंकरण एवं **त्रिनेत्रेश्वर महादेव मन्दिर** पर उत्कीर्ण लेख की लिपि के अनुसार **त्रिनेत्रेश्वर महादेव, हर-हर महादेव** और सम्भवत: **बटुक भैरव मन्दिर** समकालीन लगते हैं। इनका निर्माण आठवीं शती के अन्तिम अथवा नवीं शती के प्रथम चरण में हुआ प्रतीत होता है। जिन मन्दिरों के अवशेष धर्मशाला, भोगशाला आदि के निर्माण में प्रयुक्त हुए हैं, वे भी इसी युग के रहे होंगे। इस संदर्भ में जागेश्वर मन्दिर समूह के नव-दुर्गा, बालेश्वर, नटेश्वर और पुष्टी देवी आदि मन्दिरों का वास्तु और अलंकरणों की शैली तुलनीय है। धर्म-शाला के प्रवेश-द्वार में लगी द्वार शाखाएँ और बटेश्वर मन्दिर (जागेश्वर) की द्वार शाखाओं में बहुत समानता है। बमन सुआल की द्वार-शाखाएं और गंगा-यमुना अपनी सुन्दरता, स्पष्टता और कलात्मक अंकन की दृष्टि से इस क्षेत्र में अपनी तरह की एकमात्र उदाहरण हैं। **एकादश-रुद्र** समूह के अधिकांश मन्दिर भी इसी युग में निर्मित लगते हैं। **कार्तिकेय मन्दिर** और **उमा-महेश** मन्दिर शैली की दृष्टि से कटारमल, बैजनाथ, जागेश्वर समूह के बाद के मन्दिरों, द्वाराहाट के कुछ मन्दिरों और गंगोलीहाट मन्दिर समूह से समानता रखते हैं। इन्हें 14वीं शती के आस-पास निर्मित माना जा सकता है। यहाँ प्राप्त कुछ प्रतिमाएं लगभग 9वीं शती ई० में निर्मित और कुछ शैली की दृष्टि से लगभग 13 वीं शती ई० में निर्मित प्रतीत होती हैं।

इस तरह कूर्मांचल के इतिहास में बमन-सुआल का विशिष्ट मन्दिर समूह अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भरहरी का मन्दिर

कुँवर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर और मध्य प्रदेश के सीधी जिले की सीमा पर वर्दी से लगभग 8 किलोमीटर पूर्व में भरहरी नामक गाँव स्थित है। इसके 1 कि० मी० उत्तर-पूर्व में लगभग 50 मीटर ऊँची पहाड़ी पर लगभग नवीं शती ई० में निर्मित एक पाषाण मन्दिर है। स्थानीय लोग इसे **हनुमानगढ़ी** नाम से सम्बोधित करते हैं।

गुर्जर-प्रतिहारकालीन अन्य मन्दिरों की भाँति इस मन्दिर का निर्माण भी एक छोटी **जगती** पर किया गया है। वर्गाकार **गर्भगृह** के ऊपर **फांसना** शैली का **त्रिरथ रेखा शिखर** सुशोभित है। **गर्भगृह** की बाहरी माप 4·35 मी० × 4·35 मी० तथा भीतरी माप 2·25 मी० × 2·25 मी० है। उसके सामने **कपिली** का निर्माण किया गया है, जिसके ऊपर **शुकनासिका** रही होगी, किन्तु वर्तमान समय में वह नष्ट हो गयी है।

मन्दिर का **वेदीबन्ध खुर, कुम्भ, कलश** और **कपोत** से अलंकृत है। **जंघा** के मध्य में तीन ओर एक-एक बड़ी **रथिका** प्रदर्शित है। उसके दोनों पार्श्वों को **स्तम्भ-शाखा, खल्व-शाखा,** तथा **फुल्ल-शाखा** से सुसज्जित किया गया है। **स्तम्भशाखा** का आधार और शीर्ष भाग **घट-पल्लव** आकृतियों से सुशोभित है तथा मध्य भाग में **कीर्तिमुख** से निकलता हुआ जंजीर और घंटा (किंकिणिका) तथा अर्द्धपद्म अंकित हैं। **स्तम्भ शाखा** के ठीक ऊपर पुनः **कीर्तिमुख** का अलंकरण है। रथिकाओं में ऊपर नीचे के भारपट्टों पर **जालकों** के मध्य फुल्लियाँ उत्कीर्ण की गयी हैं। **फुल्ल-शाखा** के नीचे छोटी-छोटी रिक्त रथिकायें हैं। सामान्यतः इस स्थान पर गंगा-यमुना और उनके अनुचरों के अंकन की परम्परा थी किन्तु यहाँ इनमें छोटे-छोटे शिवलिंग भी प्रदर्शित किए गये हैं। देवगढ़ के दशावतार मन्दिर की भाँति **जंघा** भाग की इन बड़ी रथिकाओं में भी देव प्रतिमायें स्थापित रही होंगी, किन्तु वर्तमान समय में वे उपलब्ध नहीं हैं।

मन्दिर का जंघाभाग और शिखर सादी **कपोत** जैसी गढ़नों के मध्य सादे **अन्तरपत्र** से विभक्त है। **फांसना** शैली के त्रिरथ **रेखा शिखर** का ऊपरी भाग भग्न हो गया है। मन्दिर का भीतरी भाग सादा है। **प्रवेश-द्वार** पूर्व की ओर है। तत्कालीन मन्दिरों में प्रवेश-द्वार के दोनों पार्श्वों को सामान्यतः तीन द्वार-शाखाओं से अलंकृत करके उनके नीचे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गंगा-यमुना प्रदर्शित करने की परम्परा थी। सम्भव है इस मन्दिर का प्रवेश द्वार भी अलंकृत रहा हो किन्तु वर्तमान समय में वह नष्ट हो गया है और उसका कोई भी अवशेष वहाँ उपलब्ध नहीं है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भिलंगना घाटी के प्राचीन मन्दिर

बुद्धि प्रकाश बडोनी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

टिहरी गढ़वाल जनपद के उत्तर-पूर्व भाग में स्थित, खतलिंग ग्लेशियर से अक्षांश 30°46'30" उ०, देशान्तर 79°1' 30" पू० पर, **भिलंगना** नामक नदी निकल कर लगभग 100-कि०मी० आगे टिहरी नगर के निकट भागीरथी में मिल जाती है। यह नदी अपने प्रवाह पथ पर 40 किमी० के बाद घुत्तू, दयूंज, जोला, क्वीला, नयेली, सरुणा, रौंसाल, अरदेगी, घनसाली, बौर, पिलखी, पिपोला, खांड तथा टिहरी आदि स्थानों पर खुली घाटी और सोपान निर्मित करती है। घुत्तू, जोला, घनसाली और बौर के निकट भिलंगना में मिलने वाली गणेश गंगा, कन्या गंगा, हिन्दाव गाड (वशिष्ठ गंगा), नैलचामी गाड और बाल गंगा इसकी मुख्य सहायिकाएं हैं। इनकी घाटियों में सामान्यत: समुद्र तल से 700–2500 मी० ऊँचाई के मध्य गाँव बसे हैं और यत्र-तत्र अनेकानेक पुरातात्विक अवशेष मिलते हैं।

केदारखण्ड के अन्तर्गत भिलंग क्षेत्र के रूप में उल्लिखित भिलंगना एवं उसकी सहायिकाओं के निकटवर्ती गांवों में **बंजिगा, पाख, चन्द्रेश्वर महादेव, चक्रगांव, कुठार, डांग, मैगाधार, सौंण, देवल, बेलेश्वर** तथा **कोटचौरा** आदि से प्राचीन मन्दिरों के अवशेष प्रकाश में आये हैं। इनमें से बंजिगा और पाख के अतिरिक्त अन्य स्थलों पर मन्दिरों के रहे होने का अनुमान वहाँ से मिलने वाले आमलकों, भूमि आमलकों, स्तम्भों आदि से होता है।

बंजिगा गांव, प्रतापनगर तहसील में भिलंगना नदी के दायें, घनसाली-घुत्तू मार्ग पर, टिहरी नगर से 56 कि०मी० दूर स्थित है। यहाँ शिव एवं नन्दा देवी के दो पाषाण निर्मित मन्दिर हैं। स्थल तक पहुँचने के लिए टिहरी से बस द्वारा घनसाली होकर धोपड़धार तक और एक कि० मी० पैदल चलना पड़ता है।

बंजिगा गाँव के उत्तर में एक साधारण जगती पर पंचायतन प्रकार का **शिव-मन्दिर** स्थित है (चित्र सं० 25)। इसकी तलछन्द योजना अत्यन्त सामान्य है। चौकोर **गर्भगृह** के सामने **कपिली** का निर्माण किया गया है (चित्र सं० 26)। **गर्भगृह** की माप 1·51 × 1·48 मीटर है। उसके ऊपर **नागर शैली** का **त्रिरथ रेखा शिखर** और शीर्ष पर **आमलक** सुशोभित है। उसके चतुर्दिक अन्य पर्वतीय मन्दिरों की वास्तु-परम्परा के अनुरूप **छत्र** अथवा **कैनोपी** बनाने के लिए स्थान छोड़ा गया है। **वेदीबन्ध** का निर्माण **खुर, कुम्भ, कलश, कपोत** नामक चार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गढ़नों द्वारा किया गया है। **जंघा** भाग सादा है। **कपिली** के ऊपर अलंकृत **शुकनास** शोभित है। इसमें एक बड़ी **चन्द्रशाला** में लकुटधारी **लकुलीश** पद्मासन में बैठे प्रदर्शित हैं (चित्र सं० 27)। उनके दोनों ओर दो उपासक भी अंकित किये गये हैं। मन्दिर का सादा **प्रवेश द्वार** पश्चिमाभिमुख है। **गर्भगृह** का भीतरी भाग सादा है। पेड़ गिरने के कारण यह मन्दिर बायीं ओर झुक गया है।

मूल प्रासाद के चारों कोनों पर एक-एक छोटे मन्दिर स्थित हैं। इनमें साधारण **गर्भगृह** के ऊपर **एकाण्डक रेखा शिखर** बनाया गया है। इस प्रकार यह मन्दिर अपने पंचायतन स्वरूप को प्रदर्शित करता है। गर्भगृह की मुख्य देव प्रतिमा के रूप में शिवलिंग स्थापित हैं। शैली की दृष्टि से यह मन्दर लगभग 9 वीं शती ई० में निर्मित प्रतीत होता है।

मुख्य मन्दिर के **गर्भगृह** में **शेषशायी विष्णु** की एक पाषाण निर्मित सुन्दर प्रतिमा रखी हुई है (चित्र सं० 28)। इसमें चतुर्भुजी विष्णु शेष-शैय्या पर लेटे प्रदर्शित किये गए हैं। उनका एक दाहिना हाथ वक्षस्थल पर और दूसरा दायां हाथ सिर के नीचे रखा है, इस हाथ के नीचे गदा और बायीं **जंघा** पर रखे एक बाँए हाथ में शंख है। दूसरा बाँया हाथ खण्डित है। विष्णु **किरीट मुकुट, कंकण, हार, ग्रैवेयक, बाजूबन्ध, वनमाला, कटिसूत्र** आदि आभूषणों से अलंकृत हैं। उनका दाहिना पैर सीधे लम्बायमान है और बाँया पैर घुटने से मुड़ा है। पैरों के पास विभिन्न आभूषणों से अलंकृत लक्ष्मी या भू-देवी **पादसंवाहन** मुद्रा में बैठी हैं। विष्णु के **नाभि-कमल** पर चतुर्भुजी ब्रह्मा का अंकन किया गया है। इसके अतिरिक्त **परिकर** में **मधु-कैटभ ,अनुचरी** तथा शेषशैय्या के नीचे **मत्स्य, कूर्म** आदि का अंकन दर्शनीय है। यह प्रतिमा लगभग 9 वीं शती ई० में निर्मित प्रतीत होती हैं। इसकी माप 45 × 25 सें० मी० है।

शिव मन्दिर के सामने **नन्दा देवी मन्दिर** स्थित है। इसमें मूलतः आयताकार **गर्भगृह** के ऊपर **गजपृष्ठाकृति शिखर** का निर्माण किया गया है। **गर्भगृह** की माप 1·14 × 0·84 मी० है। **वेदीबन्ध खुर, अन्तरपत्र** व एक अन्य सादी पट्टी से अलंकृत है। **जंघा** भाग सादा है। **शिखर** के दोनों सिरे **चन्द्रशालाओं** से अलंकृत हैं जिनमें मानव आकृतियों का अंकन है। **गर्भगृह** में एक चतुर्भुजी देवी की स्थानक प्रतिमा स्थापित है विभिन्न वस्त्राभूषणों से अलंकृत देवी अपने दाहिने हाथों में **पद्म** व **अक्षमाला** तथा बायें हाथों में **पाश** (?) एवं अन्य अस्पष्ट वस्तु धारण किए हैं। दोनों पार्श्वों में करबद्ध मुद्रा में घुटनों के बल **वीरासन** में एक-एक परिचारिका भी बैठी हैं। देवी के सिर के चारों ओर पद्म से अलंकृत **प्रभा-मण्डल** है। स्थानीय लोग इसे **नन्दादेवी** के नाम से सम्बोधित करते हैं। प्रतिमा और मन्दिर दोनों ही शिव मन्दिर के समकालीन लगते हैं। वर्तमान समय में मन्दिर को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्लेट से छाए एक नवीन मकान में सुरक्षित कर दिया गया है जिससे उसका मौलिक स्वरूप पूरी तरह ढक गया है ।

पाख गाँव टिहरी नगर से लगभग 44 कि० मी० की दूरी पर भिलंगना नदी के बायें तट पर स्थित है । यहाँ का पंचायतन प्रकार का **नारायण-मन्दिर** स्थानीय निवासियों में अत्यन्त लोकप्रिय है । यहाँ तक पहुँचने के लिए पोखार तक बस द्वारा तथा उसके बाद लगभग 4 कि० मी० तक पैदल चल कर जाना पड़ता है ।

इस मन्दिर में वर्गाकार **गर्भगृह** और **कपिली** का निर्माण किया गया है । **गर्भगृह** की माप 1·72 × 1·72 मी० है । ऊर्द्धवछन्द योजना की दृष्टि से एक साधारण **जगती** के ऊपर **खुर, कुम्भ, कलश** तथा **कपोत** नामक पट्टियों से अलकृत **वेदीबन्ध**, त्रिरथ सादा **जंघा** और उसके ऊपर **नागर शैली** का **रेखा शिखर** सुशोभित है । शिखर का ऊपरी भाग नष्ट हो गया है । मन्दिर का **प्रवेश द्वार** पश्चिमाभिमुख है । **गर्भगृह** में **लक्ष्मी नारायण, गणेश** तथा **हरि-हर** की प्रतिमाएँ रखी हैं ।

मुख्य मन्दिर के चारों कोनों पर चार अपेक्षाकृत छोटे मन्दिर निर्मित किए गए हैं । इनकी निर्माण योजना बहुत कुछ मुख्य मन्दिर के समान ही है किन्तु इनमें **गर्भगृह** के सामने **कपिली** के स्थान पर **अर्द्ध मण्डप** जोड़े गये हैं । दो मन्दिरों के **गर्भगृह** के ऊपर **कर्ण** पर तीन **भूमि-आमलकों** से विभाजित **नागर शैली** का **त्रिरथ रेखा शिखर** और उसके ऊपर **आमलक** सुशोभित है । अन्य दो मन्दिरों के शिखर प्राचीन अवशेषों से पुनर्निमित हैं । **वेदीबन्ध** का निर्माण **खुर, कुम्भ, कलश** और **चन्द्रशालाओं** से अलंकृत **कपोत** द्वारा किया गया है । **गर्भगृह** का **वितान फुल्ल पद्म** से अलंकृत है । इनमें से उत्तराभिमुख मन्दिर के **गर्भगृह** में **शेषशायी विष्णु**, पश्चिमाभिमुख मन्दिर के **गर्भगृह** में **सूर्य** और दक्षिणाभिमुख मन्दिर में **उमा-महेश** प्रतिमा स्थापित है । चौथे मन्दिर का **गर्भगृह** खाली है । इनके **द्विशाखा** व **त्रिशाखा प्रवेश-द्वार फुल्ल** व **लता शाखा** आदि से अलंकृत हैं । प्रमुख मन्दिर के **गर्भगृह** में मुख्य प्रतिमा के रूप में **लक्ष्मी नारायण** की मूर्ति स्थापित है । इसलिए इसे लोग **नारायण-मन्दिर** कहते हैं । ये मन्दिर शैली की दृष्टि से उत्तर मध्य काल अर्थात लगभग 12 वीं शती ई० में निर्मित प्रतीत होते हैं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पारिभाषिक शब्दावली

अभय-मुद्रा	—	हाथ की ऐसी मुद्रा जिससे संरक्षण मिलने का आभास हो। इसमें हथेली खुली हुई और पाँचों अंगुलियाँ ऊपर को उठी हुई प्रदर्शित होती हैं।
अधिष्ठान	—	मन्दिर का गढ़नों से युक्त आधार।
अग्र-मण्डप	—	दो या चार स्तम्भों पर आधारित गर्भगृह के सामने स्थित अर्द्धमण्डप।
अन्तराल	—	गर्भगृह और मण्डप के मध्य का भाग।
अन्तरपत्र	—	दो गढ़नों के मध्य रिक्त स्थान।
अर्द्ध-मण्डप	—	मन्दिर के प्रवेश पर दो स्तम्भों पर आधारित कक्ष।
आमलसारिका	—	शिखर के ऊपर आमले के आकार का अलंकरण।
अश्वथर	—	अश्व आकृतियों से युक्त पट्टी।
उद्गम	—	किसी रथिका के ऊपर चैत्य-खिड़कियों (चन्द्रशालाओं) का तिकोना अलंकरण।
उत्तरंग	—	प्रवेशद्वार की चौखट का ऊपरी भारपट्ट।
उदुम्बर	—	देहली (देहरी)।
कलश	—	अधिष्ठान या वेदीबन्ध की गोलाकार गढ़न।
कपोत	—	अधिष्ठान या वेदीबन्ध की कंगूरेनुमा सबसे ऊपरी गढ़न।
कर्ण	—	कोना, मन्दिर के कोने का उभार।
कर्णिका	—	ऐसी गढ़न जिसका बाहरी किनारा धारदार पतला होता है।
कपिली	—	अन्तराल का पर्यायवाची।
कीर्तिमुख	—	सिंहमुखों के आकार की आकृति।
कुम्भ	—	मन्दिर के आधार (वेदीबन्ध) में खुर नामक गढ़न के ऊपर की गढ़न।
कुम्भिका	—	स्तम्भ का आधार।
खट्वांग	—	लम्बी हड्डी और मानव खोपड़ी को मिलाकर बना आयुध।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खुर — मन्दिर के आधार (वेदीबन्ध) की सबसे निचली गढ़न ।

गजपृष्ठाकृति — ऐसा भवन या मन्दिर जिसकी छत या शिखर हाथी की पीठ के समान हो ।

गजथर — हाथी की आकृतियों से युक्त पट्टी ।

गर्भगृह — मन्दिर का वह भाग जहाँ मुख्य देवता की प्रतिमा स्थापित होती है ।

ग्रासपट्टी — कीर्तिमुखों (सिंहमुखों) से अलंकृत पट्टी ।

घट-पल्लव — घड़ा और उसके ऊपर पत्र-पुष्पों का अलंकरण ।

चैत्यखिड़की — चैत्यगृहों के मुखभाग पर निर्मित खिड़की, चन्द्राकार (चन्द्रशाला) अलंकरण ।

छाद्य — जंघा के ऊपर का बाहर निकला हुआ भाग ।

जाड्यकुम्भ — प्रासाद-पीठ की सबसे नीचे की गढ़न ।

जगती — चबूतरा, जिस पर देवालय स्थित होता है ।

जालक — खिड़की या शिखर पर जालीनुमा अलंकरण ।

जंघा — आधार (वेदीबन्ध या अधिष्ठान) के ऊपर और शिखर के नीचे, देवालय का मध्यभाग ।

तल — किसी भवन की मंजिल, जैसे एक-तल, द्वि-तल आदि ।

तोरण — अलंकृत प्रवेश-द्वार ।

त्रिरथ — ऐसा मन्दिर, जिसमें बाहर की ओर तीन उभार हों ।

त्रिशाखा — तीन पट्टियों से अलंकृत प्रवेश-द्वार ।

नरथर — मानवाकृतियों से अलंकृत पट्टी ।

नागशाखा — नाग-नागिनियों से अलंकृत प्रवेश-द्वार पट्टी ।

निरन्धार — बिना प्रदक्षिणापथ का मन्दिर ।

नृत्य-मण्डप — नृत्य, गायन-वादन, संगोष्ठी आदि के लिए निर्मित, स्तम्भों पर आधारित कक्ष ।

पंचायतन — ऐसा देवालय जिसके चारों ओर चार अन्य छोटे मन्दिर निर्मित किए गये हों ।

पंचरथ — पाँच उभारों से युक्त मन्दिर ।

पंच-शाखा — पाँच पट्टियों से अलंकृत प्रवेशद्वार ।

परिकर — प्रमुख मूर्ति के चतुर्दिक अन्य छोटी मूर्तियाँ और अलंकरण ।

पत्रलता — पत्तियों से अलंकृत लता ।

पत्र-शाखा — पत्तियों से अलंकृत प्रवेशद्वार की पट्टी ।

पीठ — आधार ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रभावली	—	प्रतिमा के सिर के चारों ओर का प्रकाश-बिम्ब ।
प्रतिरथ	—	भद्र और कर्ण के बीच का उभार ।
भद्र	—	मन्दिर के मध्यभाग का उभार ।
भरणी	—	स्तम्भ-शीर्ष की गढ़न ।
भूमि	—	तल (मंजिल) ।
मण्डप	—	मन्दिर के गर्भगृह के सामने स्तम्भों पर आधारित कक्ष ।
मन्दारक	—	देहली के मध्य अर्धचन्द्राकार अलंकरण ।
मण्डोवर	—	प्रासादपीठ (वेदीबन्ध) और जघा अर्थात् शिखर के नीचे का भाग।
मुख-मण्डप	—	मन्दिर के प्रवेश पर स्थित मण्डप ।
रंग-मण्डप	—	स्तम्भों पर आधारित खुला मण्डप ।
ललाट-बिम्ब	—	उत्तरंग (भारपट्ट) के मध्य मे उत्कीर्ण आकृति ।
वरदमुद्रा	—	हाथ की ऐसी मुद्रा जिसे वर प्रदान करते हुए प्रदर्शित किया जाता है । इसमें हाथ की अगुलियाँ नीचे की ओर होती हैं ।
वरण्डिका	—	जंघा और शिखर के बीच की विभाजक पट्टी या पट्टियाँ ।
वेदीबन्ध	—	अधिष्ठान या अलंकृत पट्टियों से युक्त आधार ।
शाखा	—	प्रवेश द्वार के चौखट की पट्टी ।
शिखर	—	गर्भगृह की छत के ऊपर की संरचना ।
शुकनास	—	शिखर के सामने कपिली के ऊपर बड़ी चन्द्रशाला का अलंकरण ।
सभामण्डप	—	रंग-मण्डप ।
सलिलान्तर	—	मन्दिर के उभारों के मध्य का रिक्त स्थान ।
सप्तशाखा	—	सात पट्टियों से अलंकृत प्रवेश द्वार की चौखट ।
स्तम्भ-शाखा	—	अर्द्धस्तम्भ से अलंकृत प्रवेशद्वार की शाखा ।
सांधार	—	प्रदक्षिणापथ से युक्त मन्दिर ।
सिंहथर	—	सिंह आकृतियों से अलंकृत पट्टी ।
हंसथर	—	हंसों से अलंकृत पट्टी ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनुक्रमणिका

अग्नि	13, 18	गणेश गंगा	37
अग्रवाल, पृथ्वी कुमार	8	गढ़वाल	17, 37
अमर कण्टक	22	गंगा	4,17,18,24,29,33, 34
अरदंगी	37	गंगोलीहाट	17, 30
अल्मोड़ा	27	गुप्तकाशी	17
अली, रहमान	21, 24	गुर्जर-प्रतिहार	13, 21 33
अष्टिका बाबा, मन्दिरसमूह	11, 12, 13	गोपेश्वर	17
उत्तर प्रदेश	11, 17, 33	गोलामठ	21
उत्तराखण्ड	17	घनसाली	37
उमा महेश	28, 30	घुत्तू	37
एकादश रुद्र समूह	27, 29, 30	चन्द्रेश्वर महादेव	37
करपन	11	चक्रगांव	37
कन्नौज	21	चन्देल	21
कनिंघम	21, 24	चम्पावत	17
कल्चुरि	19, 21, 22	चमोली	17
कटारमल	30	चन्द्रेहे	22
कवीला	37	जेजाकभुक्ति	21
कन्यागंगा	37	जागेश्वर	30
कालप देवी	11, 12, 13	जोला	37
कार्तिकेय	13, 22, 28, 30	टिहरी	37, 38
कुठार गांव	37	डाहल मण्डल	21
कुंवर	31	डांग	37
कोट चौरा	37	तिन्दुली	13
केदार खण्ड	37	तिवारी, राकेश	9, 25
कुमायूँ	17, 27, 30	थमिया, गदेरा	27
खतलिंग	37	देवल	37
खांड	37	दशावतार	33
गणेश	13, 18, 22, 24, 38		

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्रयूंज 37
देवगढ़ 33
देव, कृष्ण 21, 24
दुर्गा 22
द्वाराहाट 30
धोपड़धार 37
नसीराबाद 9, 11, 13
नवदुर्गा, मन्दिर 30
नटेश्वर मन्दिर 30
नंदा देवी 37, 38
नयेली 37
नलचामी गाड 37
नारायण कोटी 15, 17
नागोद 21
नोहता 22
नन्दी 24
पन्ना 21
पाख 37, 38
पार्वती 18, 22
पाटिल, डी० आर० 21
पतापनगर 37
प्रासादमंडन 6, 8
पिलखी 37
पिथौरागढ़ 17
पिपोला 37
पुष्टोदेवी 30
पोखार 38
ब्रह्मा 13, 18, 24
बनर्जी, आर० डी० 21, 24
बडोनी, बुद्धि प्रकाश 35
बमन-सुआल 25, 27, 30
बजिगा, गांव 37
बटुक भैरव मन्दिर 29, 30
बानठौक, गव 27
बालगंगा 37
बैजनाथ 30
बेलेश्वर 37
बोध गया 3
बौर 37
भरहुत 3
भरहरी 31, 33
भागीरथी 37
भिलंग 37
भिलंगना 35, 37, 38
भीतर गाँव 13
भेत गाँव 17
महाकाल 24
मराई 22
मथुरा 3
मध्य प्रदेश 33
मिर्जापुर 33
मिस्रिख 11
महिषासुर मर्दिनी 28
मैगाधार 37
मैहर (म०प्र०) 19, 21
यमुना 4, 17, 18, 24, 29, 33, 34
रींवा 21
रौंसाल 37
लमगड़ा 27
लखनपुर, मल्ला 27
लखनऊ 11
लक्ष्मी नारायण 38
लक्ष्मी 18
लकुलीश 29, 38
वर्दी 33

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वरुण	17
वराह-मिहिर	8
वास्तुसार	8
वृहतसंहिता	8
वीरभद्र	24
विष्णु	24, 28, 38
स्थविर	15
सरुणा	37
सिरपुर	13
सरस्वती	22
सिंह, अमर	1, 9
सिंह तहसीलदार	19
सीधी	33
सैंण	37
सुआलनदी	27
सूर्य	22, 28, 38
सिधौली	11
सीतापुर	11
शहडोल	22
शर्मा, आर० के०	21, 24
शारदा, देवी	21
शिव	13,18,22,24,28,33 37, 38
हनुमानगढ़ी	33
हरिहर	38
हर-हर महादेव मन्दिर	29, 30
हिन्दाव गाड	37
क्षेमंकरी	22
त्रिनेत्रेश्वर महादेव	27, 29, 30

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

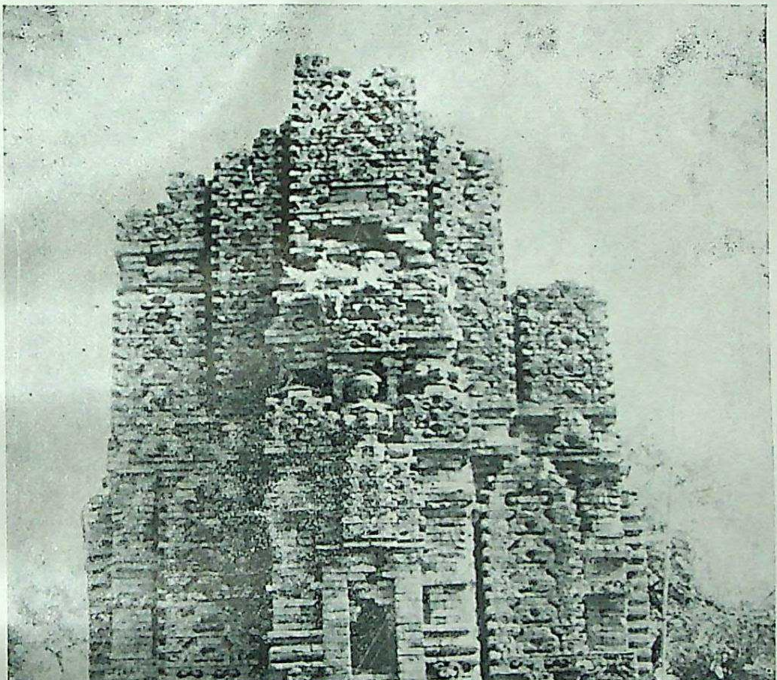

चित्र सं० 1, कालप देवी का बड़ा मन्दिर, करपन (नसीराबाद), सीतापुर, लगभग 10वीं शती ई० ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्र सं० 2, आकटीक बाबा, बड़ा मन्दिर, नसीराबाद, सीतापुर, लगभग 12-13वीं शती ई० ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

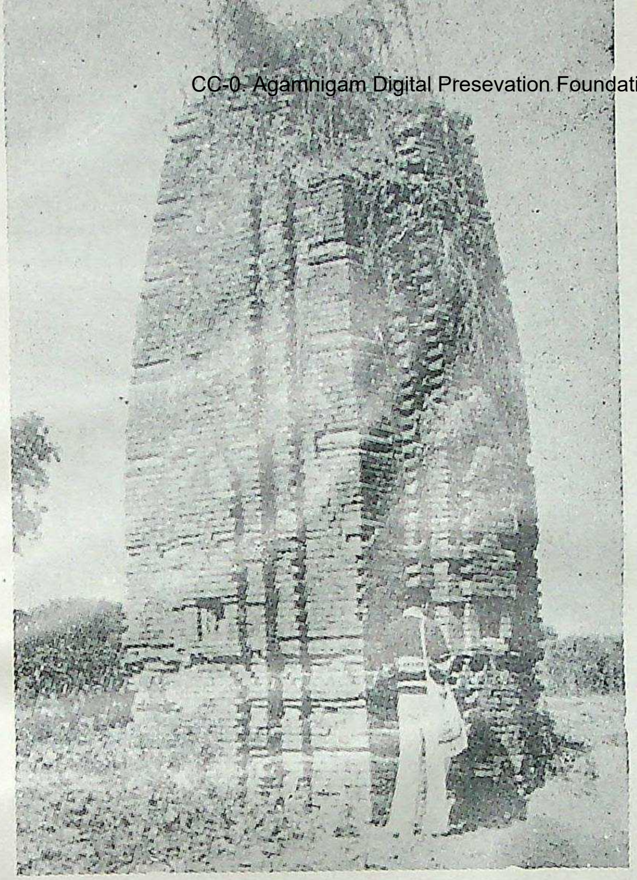

चित्र सं० 3, आक्टीक बाबा, छोटा मन्दिर, नसीराबाद, लगभग 12-13वीं शती ई० ।

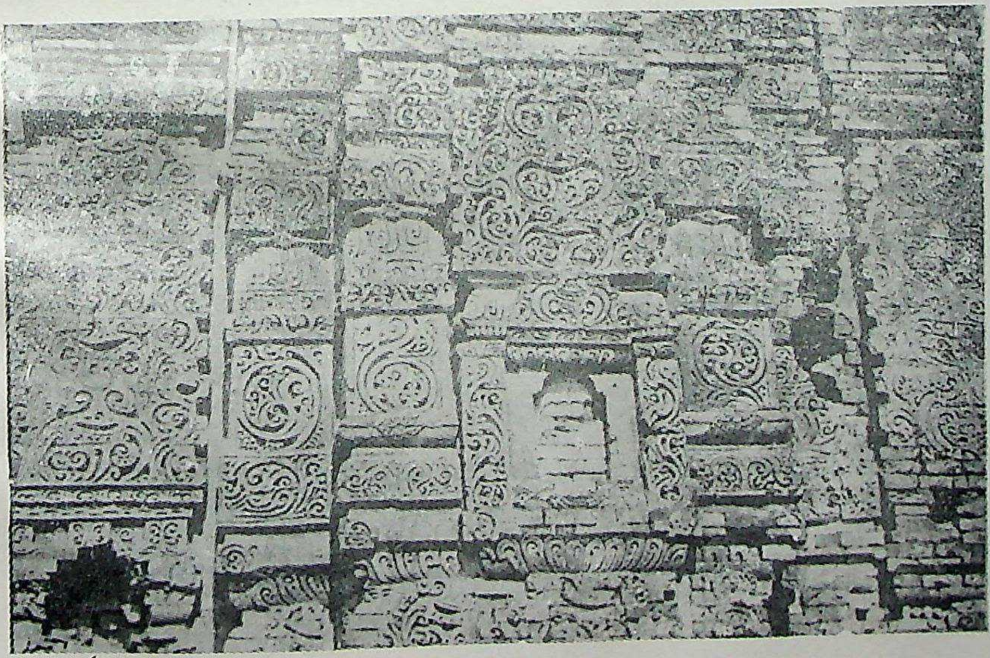

चित्र सं० 4, आक्टीक बाबा, बड़ा मन्दिर, जंघा भाग का अलंकरण, नसीराबाद, सीतापुर, लगभग 12-13 वीं शती ई० ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्र सं० 5, कल्याण सुन्दर प्रतिमा (शिव-विवाह), करपन (नसीराबाद), सीतापुर, लगभग 10वीं शती ई० ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

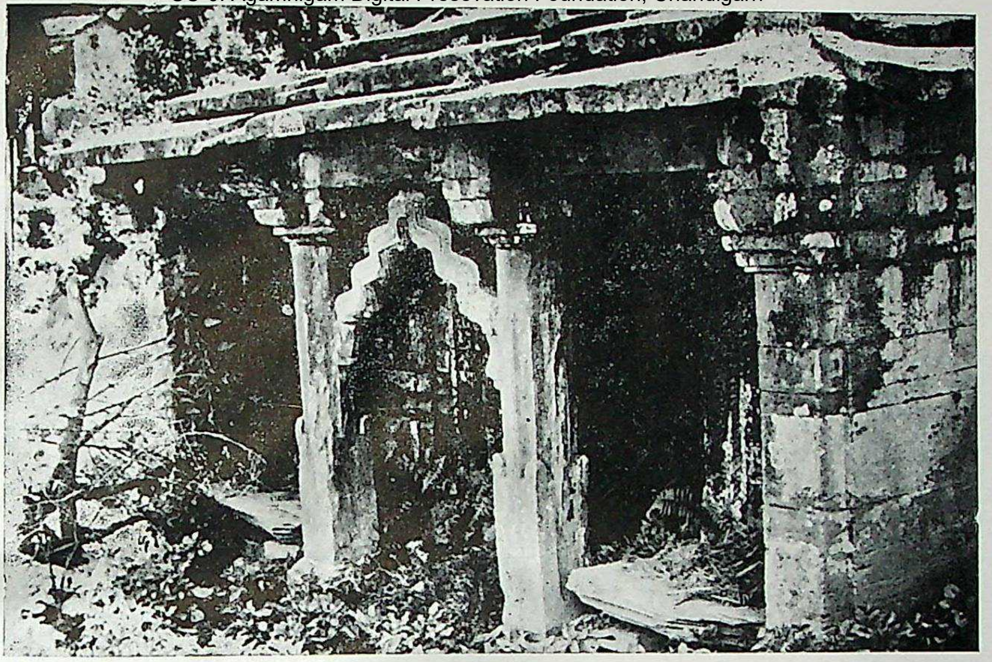

चित्र सं० 6, नारायण कोटी का नौला (अर्द्धमण्डप), चमोली, लगभग 13वीं शती ई० ।

चित्र सं० 7, नारायण कोटी का नौला (प्रवेश-द्वार का उत्तरंग), चमोली, लगभग 13वीं शती ई० ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

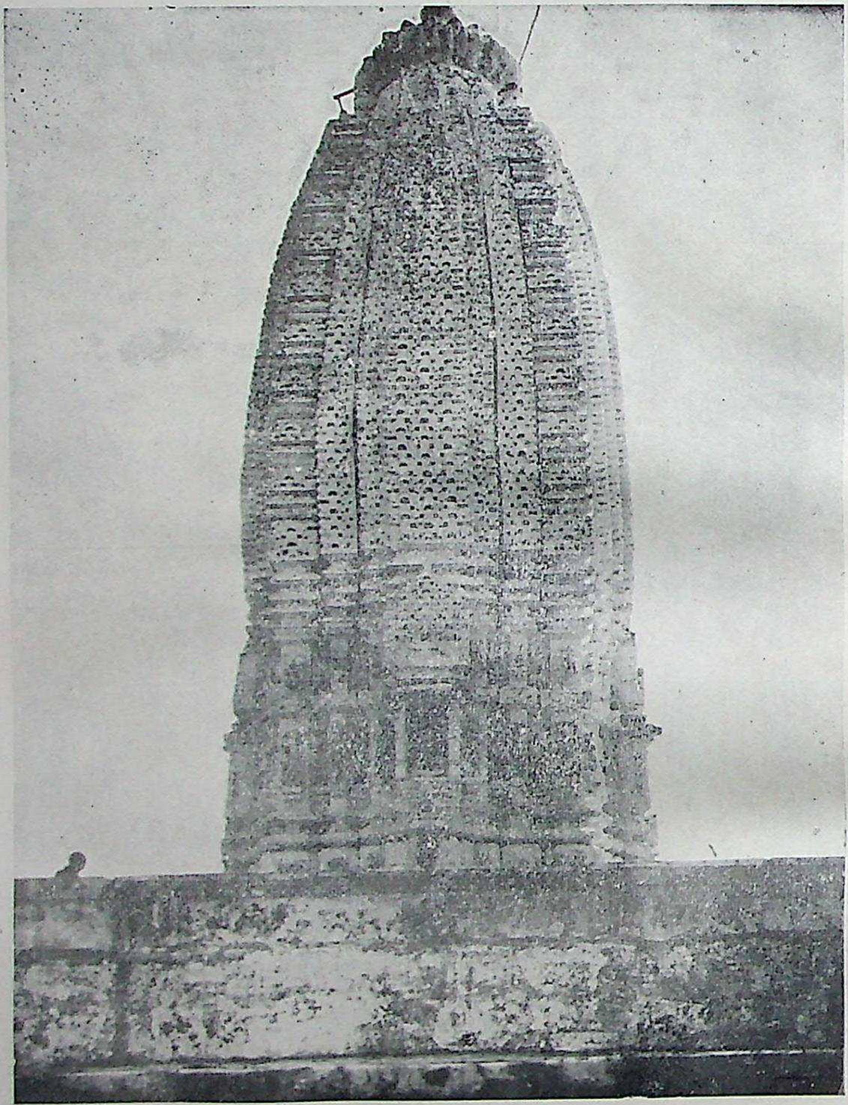

चित्र सं० 8, गोलामठ मन्दिर, मैहर (मध्य प्रदेश) लगभग 10वीं शती ई० ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्र सं० 9, गोलामठ मन्दिर मुख मण्डप, दक्षिण स्तम्भ के शीर्ष पर अलंकृत विद्याधर मिथुन, मैहर (मध्य प्रदेश), लगभग 10वीं शती ई० ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्र सं० 10, गोलामठ मन्दिर, मुखमण्डप का वितान, मैहर (मध्य प्रदेश), लगभग 10वीं शती ईसवी ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्र सं० 11, गोलामठ मन्दिर, प्रवेश-द्वार, मैहर (मध्य प्रदेश)
लगभग 10वीं शती ई० ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

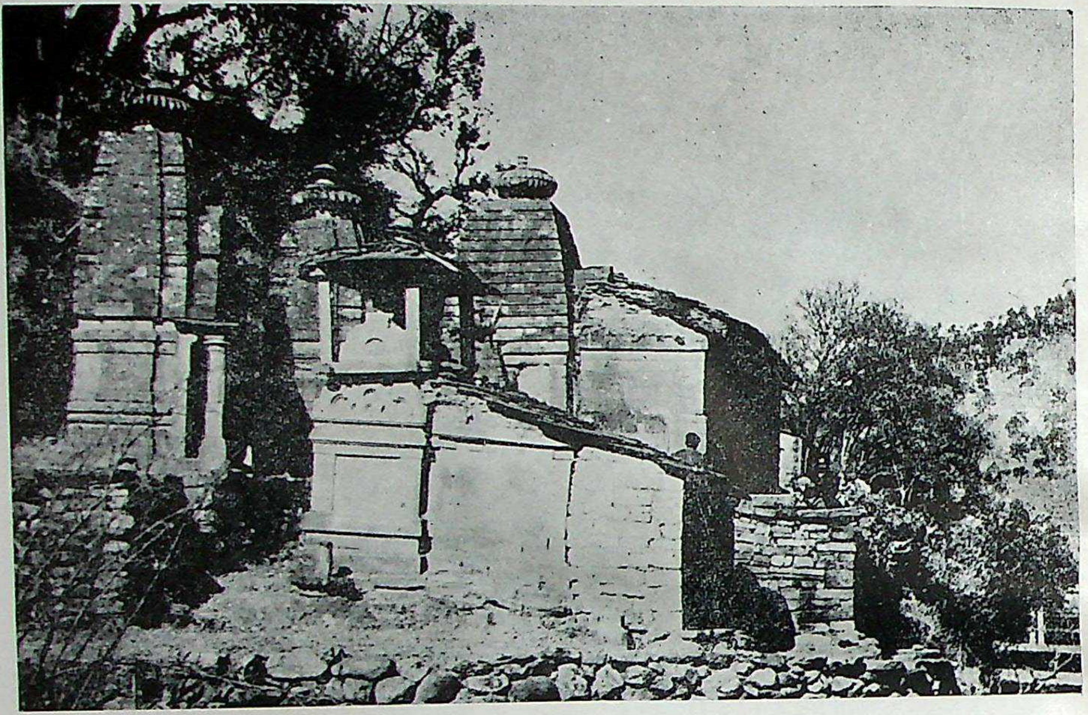

चित्र सं० 12, बमन सुआल मन्दिर समूह, अल्मोड़ा।

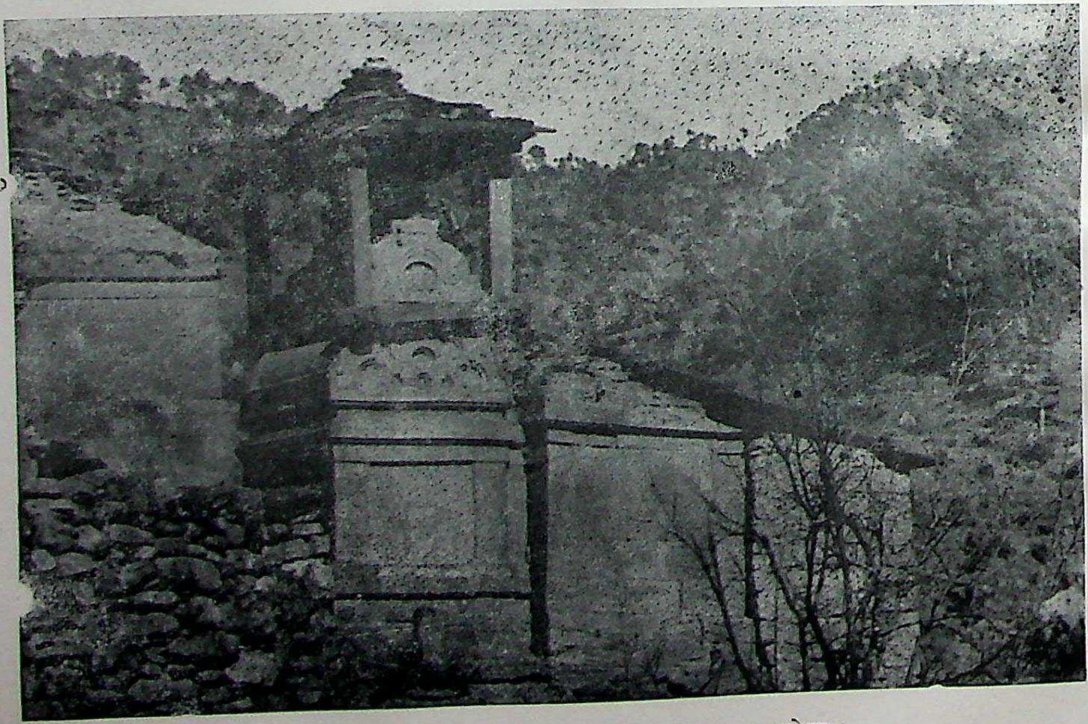

चित्र सं० 13, त्रिनेत्रेश्वर महादेव, बमन सुआल, अल्मोड़ा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्र सं० 14, अलंकृत स्तम्भ, बमन सुआल, अल्मोड़ा
लगभग 9वीं शती ई० ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्र सं० 15, मध्यकालीन ब्राह्मी लेख, त्रिनेत्रेश्वर महादेव मन्दिर, बमन सुआल, अल्मोड़ा ।

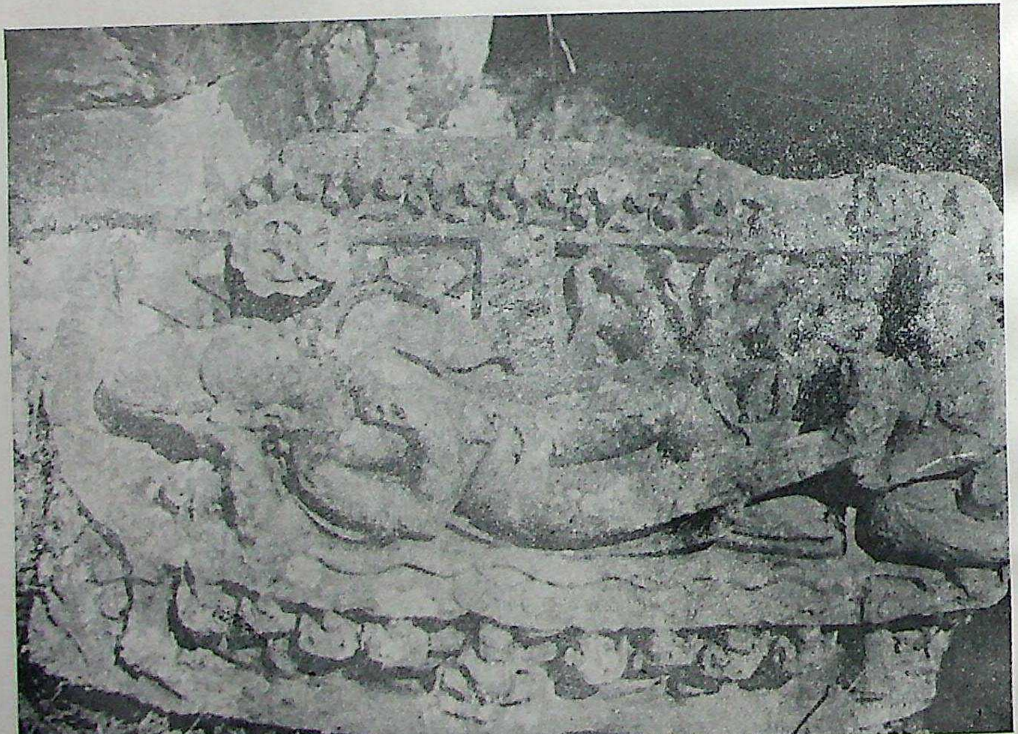

चित्र सं० 16, शेषशायी विष्णु त्रिनेत्रेश्वर महादेव मन्दिर, बमन सुआल, अल्मोड़ा ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

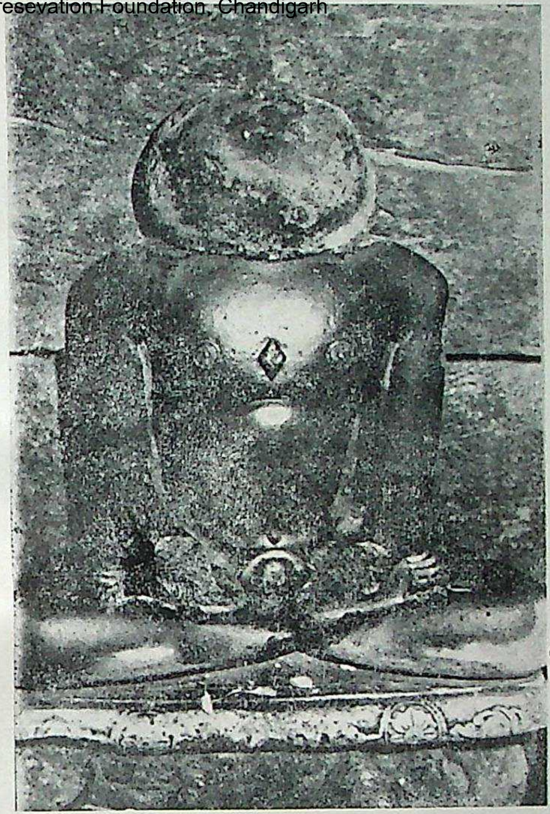

चित्र सं० 17, जैन तीर्थंकर प्रतिमा,
बमन सुआल, अल्मोड़ा ।

चित्र सं० 18, धर्मशाले के प्रवेश-द्वार का बायां
शाखा-पट्ट, बमन सुआल, अल्मोड़ा ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्र सं० 19, धर्मशाले के प्रवेश द्वार में दायीं ओर गंगा का अंकन, बमन सुआल, अल्मोड़ा।

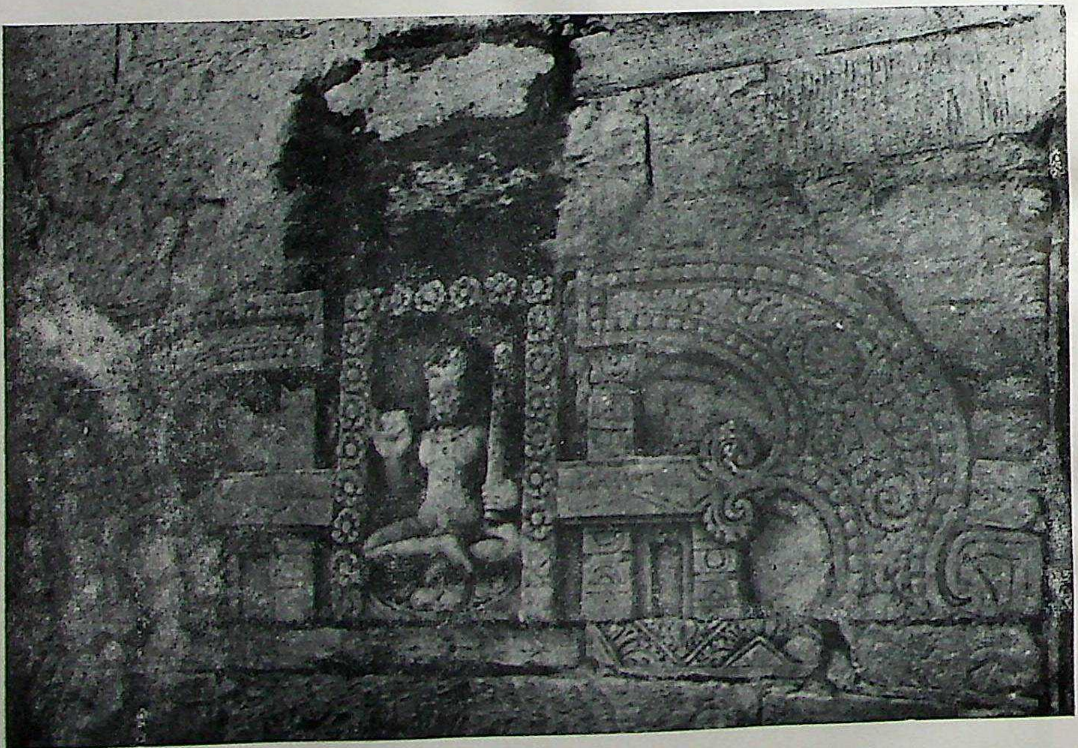

चित्र सं० 20, लकुलीशयुक्त चन्द्रशाला, धर्मशाला, बमन सुआल, अल्मोड़ा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्र सं० 21, अलंकृत पाषाण खण्ड, त्रिनेत्रेश्वर मन्दिर भोग शाला, बमन सुआल, अल्मोड़ा ।

चित्र सं० 22, अलंकृत पाषाण खण्ड, त्रिनेत्रेश्वर मन्दिर भोग शाला, बमन सुआल, अल्मोड़ा ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्र सं० 23, भरहरी मन्दिर,
लगभग 9वीं शती ई० ।

चित्र सं० 24, भरहरी मन्दिर,
जंघा भाग की रथिका, लगभग 9वीं शती ई० ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

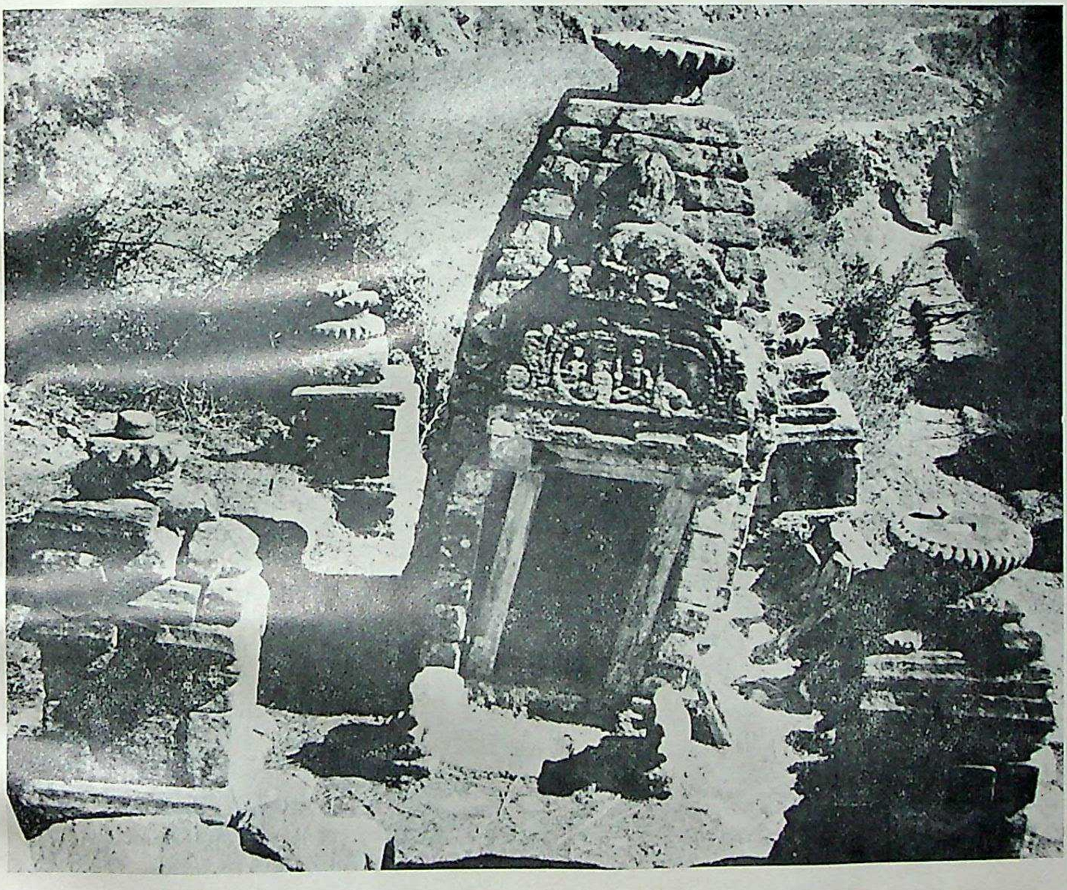

चित्र सं० 25, पंचायतन प्रकार का शिव-मन्दिर, बंजिगा, टिहरी गढ़वाल, लगभग 9वीं शती ई० ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्र सं० 26, मुख्य शिव-मन्दिर, वंजिगा, टिहरी गढ़वाल, लगभग 9वीं शती ई० ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

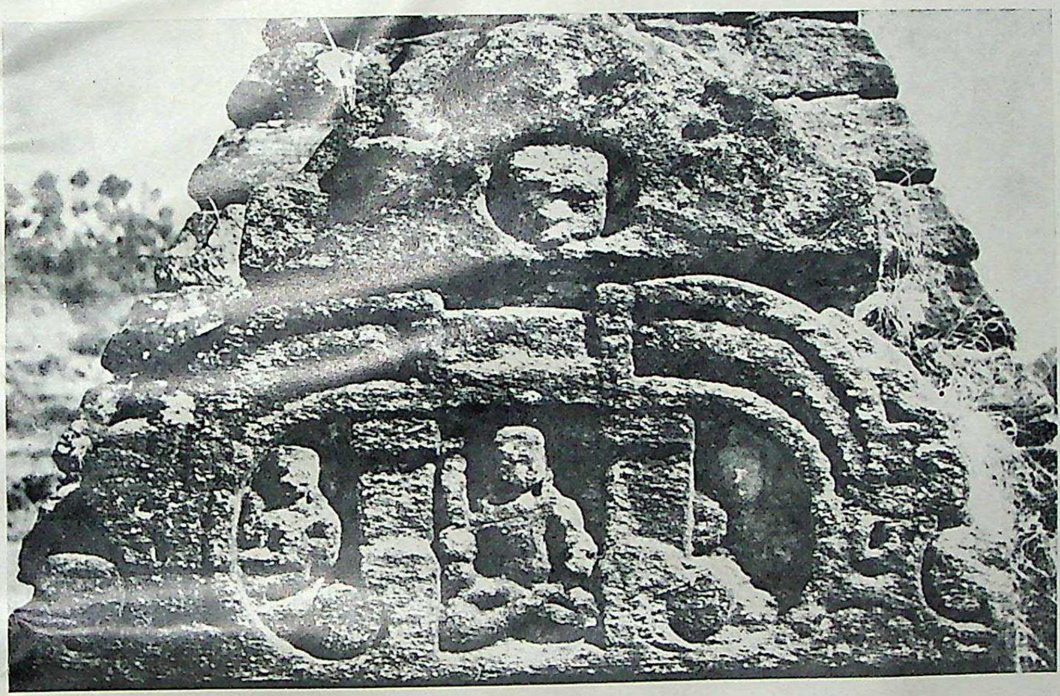

चित्र सं० 27, मुख्य शिव-मन्दिर की शुकनास की चन्द्रशाला में अंकित लकुलीश, बजिंगा, टिहरी गढ़वाल, लगभग 9वीं शती ई० ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्र सं० 28, शेषशायी विष्णु, बंजिगा, टिहरी गढ़वाल, लगभग ९वीं शती ई० ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh